विविध गीताञ्जली

विद्यालय में प्रशिक्षण देते हुए आचार्य कनकनन्दी जी गुरुदेव

विद्यालय में गणित के माध्यम से विज्ञान का प्रशिक्षण
देते हुए आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव
(परसाद, जि. उदयपुर-2006)

गीत रचनाकार : आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

चातुर्मास के लिए निवेदन

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ससंघ को महाराष्ट्र आगमन तथा चातुर्मास हेतु श्रीफल अर्पण सहित निवेदन करते हुए दि. जैन, अतिशय क्षेत्र जैनगिरी, जटवाडा, जि. औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

(गीताञ्जली धारा -6)...

(विविध-गीताञ्जली)

पद्य सृजेता- आचार्य श्री कनकनन्दी जी

ग्रंथाङ्ग - 204 संस्करण - 2011

प्रतियाँ - 1000 मूल्य - 21/-रु.

-: पुण्य स्मरण :-

स्वः श्रीमती नाथी बाई धर्मपत्नि स्व. श्री कालूलाल जी जैन (मालवी) श्रीमती अम्बाबाई सुपुत्र श्री मांगीलाल बन्धु लक्ष्मीलाल जी जैन (मालवी) के सुपुत्र जीवन, प्रशान्त एवं सुपुत्री श्रीमती रेणुका निर्मल जी जैन, कु.लीना, कु. रीतिका जैन (मालवी)

मु. पो. - झाड़ोल (जयसमन्द रोड) त.- सराड़ा, जि-उदयपुर (राज.)

9929197808, 9829672081

-: सम्पर्क सूत्र एवं प्राप्ति स्थान :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा- श्री छोटूलालजी चित्तौड़ा, चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास, उदयपुर (राज.)- 313001 मो. 9783216418

पद्य रचनाकार - कविवर वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुवर

इन रचनाओं की आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा

मैं (आचार्य कनकनन्दी) बाल्य विद्यार्थी अवस्था से ही विभिन्न भाषाओं की देश-विदेशों की प्राचीन से लेकर आधुनिक आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय, सामाजिक, प्राकृतिक, क्रान्तिकारी कविताओं को पढ़ता-सुनता आ रहा हूँ जिसमें से श्रेष्ठ कविताओं का प्रभाव मेरे जीवन में प्रेरणास्पद है। कुछ वर्षों से हिन्दी सिनेमा के कुप्रभाव तथा कुछ कुकवियों के कारण विशेषतः हिन्दी कविता के स्तर में गिरावट हुई है और हो रही है। ऐसा ही प्रादेशिक भाषाओं की कविताओं में भी कुछ गिरावट हो रही है। जिसका कुप्रभाव भारतीयों के ऊपर पड़ रहा है, इससे भी मुझे पीड़ा हो रही है और श्रेष्ठ कविताओं की आवश्यकता को अनुभव कर रहा हूँ। वैसे तो मैं विद्यार्थी जीवन से ही विदेशी साहित्य आदि का अध्ययन कर रहा हूँ परन्तु 2000 से विदेशी वैज्ञानिकों चैनलों का विशेष अध्ययन कर रहा हूँ। इससे विदेशी वैज्ञानिकों की उदारता, व्यापकता, प्रगतिशीलता, अहिंसा, शान्ति, पर्यावरण सुरक्षा, निष्पक्षता, निडरता, नम्रता, जिज्ञासा, सहज-सरलता आदि से मुझे प्रेरणा मिल रही है। 2010 को हमारा ससंघ का चातुर्मास सीपुर अतिशय क्षेत्र में हुआ। वहाँ के एकान्त, शान्त, स्वच्छ, शुद्ध वातावरण में मेरी उपरोक्त आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा ने मूर्तरूप

लेकर इन कविताओं को रचा है। कविताओं के रागों को सही रूप देने में संघस्थ साधु-साध्वी, ब्रह्मचारिणियों का महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है। इन सबको, अर्थसहयोगियों को मेरा यथायोग्य प्रतिनमोऽस्तु, आशीर्वाद है। प्रस्तुत कृति में कुछ कविताओं का प्रकाशन हो रहा है। शेष कविताओं का प्रकाशन आगामी कृतियों में शीघ्र होगा। इन सब कविताओं के माध्यम से स्व-पर-विश्व में आध्यात्मिक क्रान्ति-शान्ति हो, ऐसी शुभ मंगल कामनाओं के साथ-

विशेष सूचनाः- किसी भी कविता में राग सम्बन्धी तृटियाँ हो तो सदाशयता से राग विशेषज्ञ उसे संशोधित करते हुए गायेंगे एवं हमें सूचित करेंगे। - आचार्य कनकनन्दी

संसार में वही सबसे अधिक भाग्यवान् है जिसके मन की प्रवृत्तियों को संसार की शृंगारिक वस्तुएँ अपनी ओर खींचने में असमर्थ रहती है। (टालस्टॉय)

श्री कनकनन्दी जी महाराज की स्तुति-

रचनाः- श्रीमती भवर कुंवर चारण (कक्षा पाँचवी)

श्री कनकनंदी जी नमो नमः, बाल-ब्रह्मचारी नमो नमः।

जीव कल्याणी नमो नमः, विश्व कल्याणी नमो नमः।।

आत्मज्ञानी नमो नमः, विश्व विज्ञानी नमो नमः।

निर्मल हृदय नमो नमः, परम स्नेही नमो नमः।।

रूकमणी चन्द नमो नमः, मोहन नंदन नमो नमः।

हे सुख सागर नमो नमः, परमानंद नमो नमः।।

हे दुःखहारी नमो नमः, जय सुखकारी नमो नमः।

हे सुख दाता नमो नमः, विश्व विख्याता नमो नमः।।

दिगम्बर ताज नमो नमः, जय मुनिराज नमो नमः।

आचार्य श्री विद्यानन्द जी का पत्र आचार्य कनकनन्दी के लिए

उपगूहन-स्थितिकरण वात्सल्य-प्रभावना हेतु

श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट प्राकृत भाषा भवन

18-बी इन्स्टीटयूशनल एरिया नई दिल्ली- 110067

दूरभाषः 26564510, 26513138 वी.नि. 2534

दि. 25-11-2006

''ये व्याख्यान्ति व शास्त्रं ददाति शिक्षादिकञ्च शिष्याणाम्।
कर्मोन्मूलनशक्ता ध्यानरतास्ते साधवो ज्ञेयाः।।''

-क्रियाकलाप, पृष्ठ 143

जो न तो व्याख्यान देते हैं, न शास्त्ररचना करते हैं और न ही शिष्यों को शिक्षा आदि देते हैं, ऐसे कर्मों के विनाश में समर्थ ध्यानलीन पुरुषों को साधु जानना चाहिए।

धर्मानुरागी आचार्य श्री कनकनन्दी जी,

प्रतिवंदना! आशा है आपका रत्नत्रय वृद्धिंगत होगा। आचार्य भरतसागरजी मुनिराज को मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। वे लगभग दो वर्ष तक मेरे साथ रहे थे। वे बहुत ही शान्त स्वभावी और सरल हृदयी थे। कभी किसी को कोई अपशब्द नहीं कहते थे। सच्चे साधु की भाँति उनकी वाणी पर हमेशा सत्यमहाव्रत, भाषासमिति और वचनगुप्ति की लगाम होती थी। फिर भी आज जो लोग उनके बारे में और उनकी समाधि के बारे में मिथ्या बोल रहे हैं, उनकी वाणी सर्वथा अनर्गल है, बेलगाम है, शास्त्रसम्मत नहीं है।

अतः मेरा आपसे यही कहना है कि आप शान्ति रखें। यह कलियुग है, इसमें कलहपाहुड के उपदेशक बहुत मिल रहे हैं। क्या करें, इसमें ऐसा ही चलता है। आप तो बहुत सज्जन हैं और अत्यधिक अध्ययनशील हैं। आप बहुत तोल-मोल कर ही हर शब्द बोलते हैं। आपकी अध्ययनशीलता का तो आज हमारे सर्व साधुओं को अनुकरण करना चाहिए।

आपको स्मरण होगा कि श्रवणबेलगोला में आपको एक माह तक तेज बुखार रहा था और मैंने आपकी सेवा की थी। साधुओं में इस प्रकार का हार्दिक वात्सल्य ही होना चाहिए,

ईर्ष्या-द्वेष-मत्सर नहीं। पारस्परिक द्वेष अज्ञानता और दुर्जनता का सूचक है।

आपश्री का विश्वासु

आचार्य विद्यानन्द मुनि

स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर संभव

(आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संघ की नियमावली)

1. संघ में चातुर्मास, केशलोंच, (दीक्षा जयन्ती, आचार्य पद जयन्ती, जन्म-जयन्ती आदि नहीं मनेगी) की आमंत्रण पत्रिका नहीं छपेगी। वैसे गुरुदेव इन पत्रिकाओं को पहले से ही छपवाने के पक्ष में नहीं थे, अगर श्रावक अपनी स्वेच्छा व भक्ति से चातुर्मास की पत्रिका छपवाते भी हैं तो गुरुदेव संघस्थ उनको नहीं भेजेंगे, श्रावक ही भेजेंगे। इसलिए सूचना हेतु सामान्य व कम मात्रा में ही श्रावक पत्रिकाएँ छपाये। संगोष्ठी, शिविर, दीक्षा-महोत्सव आदि विशेष कार्यक्रम की पत्रिका के लिए उपर्युक्त प्रावधान नहीं है।

2. प्रवचन-विधान/पंचकल्याणक/मठ-मन्दिर-मूर्ति निर्माण/वेदी प्रतिष्ठा/शिविर/संगोष्ठी/साहित्य प्रकाशन/देश-विदेश में धर्म प्रचार कार्य/विश्व-विद्यालयों में शोधकार्य/विश्व-विद्यालयों में आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष की स्थापना इत्यादि कार्य पहले से ही स्वेच्छा, सहजता-सरलता से होते थे तथा आगे भी होंगे।

3. जिससे श्रावक पर अधिक आर्थिक बोझ पडता हो ऐसे कार्य स्वयं श्रावक अपनी शक्ति-भक्ति स्वेच्छा से करते हैं तो स्वयं करें, संघ ऐसे कार्यों को करने हेतु दबाव नहीं डालेगा।

4. आचार्य भगवन् की अनुमति के बिना संघ के कोई भी सदस्य (साधु/साध्वी, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी-श्रावक) किसी भी प्रकार की वस्तु श्रावक से नहीं माँगेंगे और न आदेश देंगे।

5. किसी भी प्रकार की बोली हेतु संघ दबाव नहीं डालेगा।

6. संस्था के विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण आवश्यकता के बिना संघ में नहीं संस्था में ही रहेंगे।

7. संकीर्ण पंथवादी, अर्थलोलुपी, अयोग्य, अनुशासनविहीन, अविनयी, गृहस्थ, विद्वान्, पंडित, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी, साध्वी, साधु (स्व या परसंघ) के लिए भी संघ में अनुमति नहीं है। उपर्युक्त गुणों से

युक्त व्यक्ति से लेकर साधुओं को संघ में स्वीकार्य करने का कार्य आचार्य गुरुदेव के निर्णय पर ही होगा।

8. संघ में संकीर्ण मतवाद, पंथवाद, परम्परावाद, संतवाद, ग्रन्थवाद, जातिवाद, राष्ट्रवाद से परे उदार सहिष्णु, सनम्रसत्यग्राही, अनेकान्तमय वैज्ञानिक पद्धति से स्व-पर-विश्वकल्याणकारी विचार-व्यवहार-कथन लेखन-अनुसंधान-प्रचार-प्रसार को ही महत्व दिया जा रहा है, आगे भी दिया जायेगा।

9. जिस द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, परिस्थिति, समाज में उपर्युक्त उद्देश्य एवं कार्य सम्पन्न होंगे ऐसे क्षेत्रादि विशेषतः योग्य ग्रामादि, शहरादि में ही संघ का विहार निवास, चातुर्मास अधिक से अधिक होगा।

10. संघ के सभी सदस्य स्वावलम्बी बनेंगे यानि अपना कार्य स्वयं करेंगे तथा स्वानुशासी यानि संघ के नियम-कानून-अनुशासन का पालन करेंगे एवं प्रत्येक कर्त्तव्य समय पर करेंगे।

11. स्वास्थ्य की विशेष समस्या के कारण अपवाद से जो उपचार के रूप में पंखादि, औषधि आदि का प्रयोग होता है उस समस्या का समाधान होने के बाद उसका प्रयोग नहीं करना।

12. संघस्थ सभी सदस्य परस्पर में वात्सल्य, सेवा, सहयोग, स्थितिकरण, उपगूहन से युक्त होंगे।

I आहार सम्बन्धी नियम-

1. **रसोई गैस से बना भोजन-पानी-दूध का त्याग-**
करोड़ों त्रस जीवों के शरीर से निर्मित, असंख्य स्थावर जीवों के हिंसाकारक,विस्फोट से घर के जलने से लेकर अनेक नर-नारियों की मृत्यु के कारक तथा अनेक रोगों के कारणभूत गैस से निर्मित भोजन आदि का त्याग का नियम है। विस्तृत विवरण आचार्य कनकनन्दी के साहित्यों से प्राप्त करें।

2. मटर, टमाटर, ग्वारफली, बेसन, उड़द, मसूरदाल, तुन्दरू (टिंडूरी,टोंडले), सेंगरी (मोगरी), तरबूज, खरबूज, सेमफली, लाल मिर्च, तेल आदि का त्याग।

3. शक्कर, नमक आदि का कम प्रयोग।

4. अधकच्चा-अधपका भोजन अभक्ष्य एवं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने से त्याग।

5. कच्चा खट्ट फल, खट्ट दही-मट्ठ आदि त्याग।

II योग्य निवास- स्वास्थ्य रक्षा, ध्यान, अध्ययन, अध्यापन, साहित्य-लेख-कविता आदि लेखन, धार्मिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी, देश-विदेश में धर्म की प्रभावना, विश्राम-शयन, आहार क्रिया आदि के योग्य स्थान-ग्राम-नगर में आचार्य श्री कनकनन्दी ससंघ का विहार, प्रवास, चातुर्मास आदि होंगे।

III शौच क्रिया योग्य स्थान- साधुओं के मूलगुण स्वरूप प्रतिष्ठापन समिति (शौचक्रिया), प्रातः- सन्ध्या भ्रमण, योगासन, प्राणायाम, ध्यान आदि के लिए योग्य प्रदूषणों से रहित-शान्त-स्वच्छ स्थान (निवास स्थान से 2-3 कि.मी. दूर तक) सहित ग्राम-नगरादि में श्री संघ सहित आचार्य श्री निवास-चातुर्मास आदि करेंगे।

IV आचार्य कनकनन्दी की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याः-

आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव की विदग्ध अम्लपित्त (हाईपर एसिडिटी) शारीरिक गर्मी, एलर्जी के कारण उपरोक्त योग्य भोजन, निवास स्थान आदि की आवश्यकता है अन्यथा आचार्य श्री की स्वास्थ्य समस्याएँ (वमन (उल्टी-कै) चक्कर, बेहोशी, हैजा, पीलिया, सुस्ती आदि) हो जाती है। आचार्य श्री शीत-ऋतु को

छोड़कर अन्य समय में गरम करके ठंडा किया हुआ पानी, दूध, भोजन आदि आहार में लेते हैं।

V विविध ज्ञानार्जन के नियमः-

अनुशासन, समयानुबद्धता, समय की कमी के कारण धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, भाषा, व्याकरण, नैतिक शिक्षा, सामान्य ज्ञान, प्रूफ रीडिंग, प्रबन्धन आदि का अध्ययन-अध्यापन-. प्रशिक्षण, चर्चा, शंका समाधान आदि सामुहिक रूप से कक्षा, शिविर, संगोष्ठी आदि में संघ में होता है। विशेष परिज्ञान आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के साहित्य से प्राप्त कर सकते हैं।

VI स्वास्थ्य सम्बन्धी सामुहिक प्रशिक्षण के नियमः-

स्वास्थ्य रक्षा के नियम, रोग दूर करने के उपायभूत आदर्श आहार, विचार, दैनिकचर्या, प्राणायाम, योगासन, ध्यान आदि का प्रशिक्षण संघ में सामूहिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी में ही दिया जाता है तथा आचार्य श्री के विभिन्न साहित्यों में भी वर्णित है किन्तु व्यक्तिगत नहीं दिया जाता है अतः कक्षा आदि से लाभान्वित हों परन्तु व्यक्ति गत न चाहें, न ही पूछें न ही कुछ मांगे। विशेष परिज्ञान आचार्यश्री

के साहित्यों से प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा ही अन्यान्य समस्या/ शंका-समाधान सम्बन्धी जान लेना चाहिए।

VII त्याग-व्रत-नियम-वचन सम्बन्धी अनुशासनः-

(A) किया गया त्याग एवं लिया गया व्रत-नियम पालन करेंगे।

(B) त्याग किया गया गृहस्थ जीवन सम्बन्धी विषय (शादी,विवाह, व्यापार, कुटुम्ब, परिवार, नौकर-चाकर, पढ़ाई, नौकरी आदि) चर्चा नहीं करेंगे, न ही लिखेंगे अर्थात् नव कोटि से त्याग रहेगा।

(C) गृहस्थी सम्बन्धी किसी भी प्रकार के विषयों को मन-वचन-काय, कृत, कारित, अनुमोदना से त्याग करेंगे।

(D) विकथा, निन्दा, चुगली, वाचालता, राग-द्वेष-ईर्ष्या-घृणा-लड़ाई-झगडा-फूट डालने योग्य वचन, कठोर आदि वचन पूर्ण त्याग करेंगे। अतः उपरोक्त विषयों की चर्चा संघ के साथ अन्य कोई गृहस्थ-श्रावक-साधु-साध्वी आदि न करें।

(E) संघ में किसी भी प्रकार ख्याति, पूजा, लाभ, प्रसिद्धि, चन्दा-चिट्ठा, याचना, किसी भी प्रकार से दूसरों के ऊपर दबाव डालने के काम पूर्णतः वर्जित है।

सुविचार :-

1. जो व्यर्थ बात है चाहे वह किसी के द्वारा कही गई हो, उसका उत्तर देने का सवाल ही कहाँ उठता है? आप खुद ही सोचिये! उसे उत्तर देने योग्य मानकर आप उसे सार्थक नहीं मान लेते हैं?/बना देते हैं?

2. झूठे शब्द सिर्फ खुद में बुरे नहीं होते बल्कि वे आपकी आत्मा को भी बुराई से संक्रमित कर देते हैं।

3. **संस्कारवान् का परिचय :-** किसी मनुष्य या स्त्री की संस्कृति या संस्कार का पता इस बात से लग जाता है कि वे झगड़ने के समय कैसा व्यवहार करते हैं। (जार्ज बर्नार्ड शॉ)

4. **सत्साहसी का परिचयः-** दबाव तनाव और विपदा की स्थिति में भी मर्यादा का परिचय देना, साहस की बस यही परिभाषा है। (अर्नेस्ट हेमिंग्वे)

5. कोई यदि योगी बाहर के शक्ति जगत् से अपने को पृथक् करके एकान्त में रहे तो वह सब तरह के रोगों से मुक्त हो सकता है। (महर्षि अरविन्द घोष)

6. संसार में वही सबसे अधिक भाग्यवान् है, जिसके मन की प्रवृत्तियों को

संसार की शृंगारिक वस्तुएँ अपनी ओर खींचने में असमर्थ रहती है। (टालस्टाय)

7. आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव अधिक से अधिक मौन एवं एकान्तवास में रहकर साधना करते हैं, इसके लिए आप सब के सदाशय पूर्ण सहयोग की आवश्यकता है।

-उपरोक्त नियम के सारांश-

आचार्यश्री कनकनन्दीजी गुरुदेव आगम, विज्ञान, मनोविज्ञान, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, अनुभव, स्वास्थ्य, साधना, शान्ति, स्वाध्याय, ध्यान, स्वप्न, शकुन, अंगस्फुरण, पूर्वाभास, समाज, परिस्थिति, पर्यावरण, साहित्य लेखन एवं प्रकाशन तथा देश-विदेश में आचार्यश्री के शिष्यों द्वारा हो रही धर्म प्रभावना की दृष्टि से आहार, विहार, निवास, चातुर्मास आदि करते हैं एवं आगे भी करेंगे।

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	गीत का विषय	पृ.क्र.
I	इन रचनाओं की आवश्यकता-पीड़ा-प्रेरणा	2
II	श्री कनकनन्दीजी महाराज की स्तुति रचना- श्रीमती भंवर कुँवर चारण (कक्षा पाँचवीं)	4
III	आचार्य श्री विद्यानंदीजी का पत्र (आ. कनकनन्दी के लिए)	5
IV	स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर संभव	7
1.	जिनेन्द्र स्तवन	19
2.	सरस्वती स्तुति	20
3.	वैश्विक सच्चा-अच्छा भाव एवं काम	21
4.	गलत भाव एवं कार्य का कुफल	22
5.	पतनकारी विरोधाभास त्यागो	24
6.	शुद्धात्मा से प्राप्त शिक्षायें	25
7.	मेरी (आचार्य कनकनन्दी) भावना एवं साधना	27
8.	साधु यदि है सुख जो पाना	29

9.	आध्यात्म चिन्तन (द्वादश अनुप्रेक्षा)	31
10.	आध्यात्मिक सोपान (संसार एवं मोक्ष की यात्रा) (गुणस्थान गीत)	37
11.	परम स्वतन्त्रता के नेता बनने की भावना (तीर्थंकर बनने योग्य सोलह भावनाएँ)	41
12.	जैन धर्म की अति विशेषताएँ	47
13.	कार्य-कारण सिद्धान्त (Cause & action) विश्व के हर कार्य के कारण (निमित्त-उपादान मीमांसा)	49
14.	(ब्रह्माण्ड का पूर्ण ज्ञान नहीं है वैज्ञानिकों को) (ब्रह्माण्डीय व्यवस्था एवं मोक्ष अवस्था) (जैन धर्म में वर्णित ब्रह्माण्ड एवं वैज्ञानिक अवधारणा के ब्रह्माण्ड की समीक्षा)	51
15.	संघटन में शक्ति, विघटन में क्षति	53
16.	"वैश्विक स्वास्थ्य हेतु भावना" (व्यर्थ विनाशकारी भावनाओं को त्यागो मानव) (मानव व्यर्थ में ही अधिक पाप एवं रोगों को निमंत्रण देता है)	55
17.	दीपावली पर्व दीवालीया पर्व न बने! (पावन दीपावली तथा पतित दीवाली)	58

18. हे मानव! वन गिरि का कृतघ्न न बन! 59
19. हे मानव! विकृति को छोडकर संस्कृति अपनाओ! 61
(मानव नीयत से नियम बनाता है न कि सच्चाई के आधार पर)
20. प्राचीन आचार्यों एवं ग्रन्थों का इतिहास (प्राचीन ग्रन्थकार, आचार्य, ग्रन्थ एवं विषय) 64
21. भारतीय पर्वों के उद्देश्य-शिक्षा (भारतीय पर्वों का इतिहास) 68
22. परिणाम से परिणाम (आध्यात्मिक व्यवस्थापन गीत) 71
23. जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ एवं समाधान 73
24. अच्छी कथा स्वीकारो-ओछी कथा नहीं! 75
25. मानव चाहो यदि सदा सुखी रहना (स्वस्थ्य रहने के नियम) 77
26. पापी से भी मैं लेता हूँ शिक्षा 79
27. आत्मिक दृष्टि से रहित सर्व जीव निम्न श्रेणीय जीव 80
28. आत्म धर्म है मेरा 83
29. बच्चों! आदर्श जीवनचर्या से बनो महान् 84
30. आध्यात्मिकता से तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य 85
(आध्यात्मिकता से शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ)
31. कहाँ है आना जाना ठिकाना?! 88
मेरे संस्मरण में आचार्य श्री भरतसागर जी गुरुदेव 89

''जिनेन्द्र स्तवन'' (1)

तर्ज - (बंगला/उडिया राग...)

जय जय जिनदेव, जय हे! अच्युत/(विश्वेश/तीर्थेश)
आपने किया हे देव!, चारों घाती नाश।। आ.आ.आ
त्रिकालवर्ती समस्त, गुण व पर्याय।
आप तो जानने वाले, सर्वज्ञ हे देव।। (1)
अनन्तवीर्य के स्वामी, प्रभु अन्तर्यामी।
अनन्त सुख के भोगी, आत्मानन्द स्वामी।। (2)
जय समवसरणाधीश, जय दिव्यगीरा।
जय विश्व हितंकरा, जय जिनेश्वरा।। (3)
गणधरादि से पूज्य, शतइन्द्र पूज्य/चतुर आनन।
अविकारी वीतरागी, कमल आसन।। (4)
विश्व के गुण-दोष ज्ञाता, तथापि आत्मस्थ।
किसी से न राग-द्वेष, सब में माध्यस्थ।। (5)
भव्य की भावी पर्याय, आप का स्वरूप।
सिद्ध की पूर्व पर्याय, आप आत्मरूप।। (6)

सेमारी, 12/10/2011, रात्रि 12.31

सरस्वती स्तुति (2)

राग :- (1. जय जय महालक्ष्मी... विष्णु पटरानी...)

जय जय माँ शारदा... सुनो हे विनती
शुद्धात्मा प्राप्ति निमित्त... करूँ मैं विनती/(तेरी स्तुति) आ.आ.आ...(स्थायी)
तू मार्गदर्शिका माँ... मुझे दे दो सुज्ञान
सुज्ञान के द्वारा माता... पाऊँ निज ज्ञान... (1)
स्वज्ञान के द्वारा माता... पाऊँ सर्वज्ञान
ज्ञानामृत पान कर... पाऊँ निज स्थान... (2)
अनादिकाल से माता... न किया स्वज्ञान
स्वज्ञान के बिना माता... किया संसार भ्रमण... (3)
राग-द्वेष मोहादि को... माना निज रूप
सत्ता-सम्पत्ति आदि को... माना निज रूप... (4)
इसी निमित्त से पाप... किया है विविध
पाप के फल कारण... पाया दुःख है अजस्र/(विविध/विचित्र)... (5)
स्वात्म प्राप्ति हेतु माता... करूँ तेरा ध्यान
ख्याति पूजादि निमित्त... नहीं करूँ ध्यान... (6)
'कनकनन्दी' आत्मा में... माता तेरा वास
केवलज्ञान निमित्त... तेरा हो आशीष... (7)

सेमारी, दि=12/10/2011, रात्रि 1.21 एवं प्रातः 9.46

वैश्विक सच्चा-अच्छा भाव एवं काम (3)

राग:- (ना कजरे की धार...)

न विवशता का भाव... हो श्रद्धापूर्वक काम
हो अनुभव से काम... सही निर्णय होता है... हो हो... (टेक)...
संकीर्ण न हो भाव... उद्दण्ड न हो काम...2
आत्मविश्वास भाव... सद् विकास होता है... (1)
अहंकार का न भाव... हो आत्मगौरव काम...2
स्वावलम्बन से काम... सच्चा सुख मिलता है... (2)
भाव न हो भेद-भाव... हो वैश्विक उदार भाव...2
स्वार्थ न हो भाव... सुप्रभाव पड़ता है... (3)
न हठग्राहिता भाव... हो विवेकग्राह्य काम...2
हो सत्यनिष्ठ काम... सद्ज्ञान बढ़ता है... (4)
न पक्षपात का भाव... न तोड़-फोड़ का काम...2
सबमें हो सद्भाव... तब संगठन होता है... (5)
संक्लेश का न भाव... हो सत्य-समता काम...2
हो विमल सहज भाव... सद्धर्म होता है... (6)
हो संस्कार सदाचार... बौद्धिक न विकार...2
हो सर्वोदय का ज्ञान... सही शिक्षण होता है... (7)
न ख्याति पूजा का भाव... हो आत्म-उद्धार काम...2

हो आत्म-प्राप्ति काम... सत् साधक होता है... (8)
हो विनम्र आज्ञाधार... जो गुणग्राही उदार...2
जो ज्ञान-सेवा तत्पर... सच्चा शिष्य होता है... (9)
है 'कनकनन्दी' का भाव... हो विश्व का उद्धार...2
हो सत्य-शान्ति प्रसार... विश्व कल्याण होता है... (10)
सेमारी, दि=13/10/2011, मध्याह्न 3.01

गलत भाव एवं कार्य का कुफल (4)

राग :- (ना कजरे की धार...)

विवशता का भाव... न श्रद्धापूर्वक काम!
न अनुभव से काम... सही निर्णय कैसे हो?
व्यक्ति-विकास कैसे हो?
राष्ट्र-विकास कैसे हो? हो...हो...(स्थायी)
संकीर्णता का भाव... उद्दण्डता का काम...2
अन्धविश्वास भाव... सद् विकास कैसे हो?... विवशता... (1)
अहंकार का हो भाव... न आत्मगौरव का काम...2
न स्वावलम्बन काम... सच्चा सुख कैसे हो?... विवशता... (2)
भावना में भेदभाव... हो संकीर्ण क्षुद्र भाव...2
स्वार्थमय हो भाव... कुप्रभाव पड़ता है... विवशता... (3)

हठग्राहिता का भाव... नहीं विवेकग्राह्य काम...2
नहीं सत्यनिष्ठा काम... अज्ञान बढ़ता है... विवशता... (4)
समय पर न हो काम... अनुशासन का न नाम...2
कामचोरी का हो भाव... तो कैसे विकास हो?... विवशता... (5)
हो पक्षपात का काम... हो तोड़-फोड़ का काम...2
नहीं हो सद्भाव... तब विघटन होता है... विवशता... (6)
संक्लेश का हो भाव... नहीं सत्य समता काम...2
नहीं विमल सहज भाव... कुधर्म होता है... विवशता... (7)
नहीं संस्कार सदाचार... हो बौद्धिक विकार...2
नहीं सर्वोदय का ज्ञान... कुशिक्षण होता है... विवशता... (8)
हो ख्याति पूजा का भाव... नहीं आत्मउद्धार काम...2
करे आत्म पतन काम... मिथ्या साधक होता है... विवशता... (9)
न आत्मिक अनुभव ज्ञान... न वैश्विक उदार भाव...2
न शिष्यानुग्रह काम... मिथ्या गुरु होता है... विवशता... (10)
नहीं विनम्र आज्ञाधार... नहीं गुणग्राही उदार...2
नहीं ज्ञान सेवा तत्पर... मिथ्या शिष्य होता है... विवशता... (11)
है 'कनकनन्दी' का भाव... न हो मिथ्या भाव आचार...2
हो सत्य शान्ति प्रसार... सर्व कल्याण होता है... विवशता... (12)
सेमारी, दि= 13/10/2011, रात्रि 10.58

पतनकारी विरोधाभास त्यागो! (5)

राग :- (1. पावन है इस देश... 2. कवि सम्मेलन का राग...)

विरोधाभासी कारणों से, हो रहा देश का पतन
अनेकता में एकता नहीं, विघटनों से पतन
भारत का है पतन... स्थायी...

ढुलमुल नियम पाले, श्रद्धा रहित विवश
अकल बिना नकल करे, निर्णय बिना विचार... (1)
संकीर्णता का भाव अन्दर दिखाते प्रगतिशीलता
अन्धविश्वास अन्दर भरा, शिक्षित होने की दम्भता... (2)
अहंकार से भरे हुए हैं, ठगों के जैसी नम्रता
आत्मगौरव स्वावलम्बी बिन, कैसी प्रगतिशीलता... (3)
भावना में तो भेदभाव युत, दिखाते एकता भावना
जाति पंथ राजनीति धन से, करते विभेद सर्जना... (4)
कहते भारत आध्यात्मिक देश, करते नट-नटी की अर्चना
भ्रष्टाचार में शिरोमणि देश, नेता देते कुसान्त्वना... (5)
साक्षर बनकर राक्षस बनते, विवेक चारित्र हीन
फैशन-व्यसन गुण्डागर्दी से, करते है नंगा नर्तन... (6)
समय का अभाव बताते हैं, समय पे कार्य न करते हैं

आलस्य प्रमाद गप्पबाजी में, व्यर्थ में समय गँवाते हैं... (7)
आर्थिक विकास का दम्भ भरते, अन्नदाता का करें शोषण
आत्महत्या तक किसान करते, कहाँ है न्याय शासन... (8)
परोपदेश में कुशल होते, आचरण में शून्यता
देश संस्कृति का गर्व करते, अपसंस्कृति में लिप्तता... (9)
भाईचारा का नारा देते, गुरुगुणी जन से शत्रुता
धन मान हेतु भ्रष्टाचार करें, कैसे आवे है श्रेष्ठता... (10)
धर्म के नाम पर आडम्बर रचते, सत्य समता से रिक्तता
धन जन मान के तुला पर, तोलते धर्म की श्रेष्ठता... (11)
'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो, त्यागो है विरोधाभास
आत्मविकास से राष्ट्र हित करो, यह मेरा शुभ आशीष... (12)

सेमारी, 13/10/2011, रात्रि 12.38

शुद्धात्मा से प्राप्त शिक्षायें (6)

(समयसार का सार)

(प्रत्येक जीव का स्व शुद्ध स्वरूप)

तर्ज :- (1. छोटी छोटी गैया... 2. हे परम कृपालु...)

सिद्ध से शिक्षा मिले विविध रूप, प्रत्येक जीव का शुद्ध स्वरूप,

अमूर्तिक चिदानन्द निज स्वरूप, तन-मन इन्द्रियों से रहित रूप।
जन्म जरा मृत्यु नहीं जीव स्वरूप, भाव-द्रव्य-नोकर्म से रहित रूप।।

राग, द्वेष, मोह नहीं जीव स्वरूप, यह सब विभाव है अनात्म रूप।
चतुर्गति स्वरूप भी नहीं है जीव, चौरासी लाख योनि रूप अशुद्ध जीव।।(1)

चौदह गुणस्थान समास सब, अशुद्ध भाव कर्म सापेक्ष सब,
जाति कुल लिंग राष्ट्र जीव के नहीं, शत्रु-मित्र-भेद-भाव जीव के नहीं।।(2)

धन, जन, मान रूप रंग भी नहीं, धनी गरीब का कोई भेद भी नहीं,
शासक-शासित कोई भेद भी नहीं, आकाश का यथा कोई रंग भी नहीं।।(3)

मौन समता और निस्पृह भाव, अनासक्त निर्द्वन्द निर्मल भाव।
आकर्षण-विकर्षण भाव रहित, स्वयं में लीनता भाव सहित।।
विश्व के ज्ञाता आत्मस्थ रूप, अनन्त विरोधी गुणों से युक्त।। (4)

अनन्त ज्ञान दर्शन सुख व शक्ति, प्रत्येक जीव की है स्वभाव शक्ति।
अगुरुलघु अव्याबाध सूक्ष्मत्व गुण, सम्यक्त्व अवगाहन प्रभुत्व गुण।।
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य व उर्ध्वगमन, सत्य समतादि अनन्त गुण।। (5)

क्षायिक दान, लाभ, भोग उपभोग, प्रत्येक जीव के है आत्म वैभव।
सत्य शिव सुन्दर व सच्चिदानंद, सनातन अविनाशी आनन्द घन।।
शुद्धात्मा से यही शिक्षा मिले हैं, ''कनकनन्दी'' को यही भाये है।। (6)

सेमारी- 9/10/2011 प्रातः 4.26

मेरी (आचार्य कनकनन्दी) भावना एवं साधना (7)

तर्जः- (जिसने रागद्वेष...मेरी भावना 2. स्याद्वाद के झरने में...)

मेरी भावना होती सदा है, स्वपर विश्व कल्याण हो-2
सत्य समता शान्ति के मार्ग पर, चलकर सर्व कल्याण हो-2 (टेक)

हर जीव करे परम विकास, अन्य को बाधा बिन पहुँचाकर-2
हर विकास में निहित हो सदा, आत्मिक शुद्धि समताचार-2
इसी हेतु करे धर्मपालन, शिक्षा ग्रहण या राज्य पालन-2
व्यापार नौकरी पशुपालन, कृषि कार्य या शिल्प लेखन-2...(1)

आत्मिक शक्ति विकास द्वारा, साधु जीवन करे पालन-2
द्रव्य क्षेत्र काल भावानुसार, आत्मसाधना का करे पालन-2
उदार सहिष्णु पवित्र भाव से, धर्म साधना का हो पालन-2
धार्मिक बने पर कट्टर न बने, व्यापक विचार करे पालन-2... (2)

भेद-भाव व ईर्ष्या द्वेष बिन, धार्मिक कार्य का हो पालन-2
अपमान कर कथनी करनी से, दूर रहे सदा धार्मिक जन-2
अनुशासन व शालीनता पूर्ण, कथनी करनी का हो पालन-2
परस्पर सहयोग के द्वारा, सम्पादन हो महान् काम-2... (3)

इसी हेतु मैं नव कोटि से, करता हूँ सदा ही वर्तन-2
मेरी दृष्टि में कोई न पराया, सब के लिए मम हित चिन्तन-2

इसी हेतु मैं सब हित हेतु, लेखन कथन से करूँ वर्णन-2
पहले-पहले कोई अज्ञ मानव, अन्यथा मानता मुझे न जान... (4)

इसलिए मैं ऐसे मानव से, समता भाव से लेता हूँ काम-2
जो माने उसे अधिक कहता हूँ, पवित्र भाव से लेता काम-2
अतएव मैं मौन रखता हूँ, निस्पृह एकान्तवास व ध्यान-2
अनजान सम भोला रहता हूँ, न हो जाये विषम काम-2... (5)

ख्याति पूजा व प्रसिद्धि रहित, अध्ययन चिन्तन में रहता हूँ लीन-2
धन जन मान के द्वन्द रहित, शोध-बोध में मैं लवलीन-2
आदहिदं कादव्वं सूत्र को, पहले पालन करूँ निदान-2
सनम्र सत्यग्राही जन को, हितोपदेश करूँ प्रदान-2... (6)

मोही जन तो संकीर्ण स्वार्थ में, सदा रहते हैं अति तल्लीन-2
हितोपदेश उन्हें न चाहिए, उन्हें चाहिए धन जन मान-2
अधिक जन पंथवादी होते, संकीर्ण कट्टरता जकड़े-2
उन्हें न चाहिए सत्य शान्ति, चाहें वे धन जन प्रसिद्धि-2... (7)

ऐसे जन से माध्यस्थ रहकर, विषमता से दूर ही रहूँ-2
विषमता से कई समस्या होती, समता से समस्या होती दूर-2
स्व पर विश्व हिते किया बखान, अन्यथा भाव मम नहीं निदान-2
"कनकनन्दी" चाहे विश्वकल्याण, आत्मकल्याण से सर्व कल्याण-2...(8)

सेमारी- 10/10/2011, मध्याह्न 4.09

साधु यदि है सुख जो पाना (8)

(तन-मन आत्मा के स्वास्थ्य के लिए साधु को करणीय)

तर्ज :- (परदेसियों से न अखियाँ मिलाना...)

साधु यदि तुम्हें सुख है जो पाना।
तन-मन-आत्मा को स्वस्थ्य ही (रखना)/बनाना।
इसी हेतु है! तुम्हें सतर्क/(सजग) रहना।
अयोग्य काम को कभी न करना।। (टेक)

स्वस्थ्य तन हेतु मन स्वस्थ्य रखना।
मन स्वस्थ्य हेतु आत्म स्वस्थ्य रखना।
इसी के हेतु है सदा सुयोग्य रहना।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव सात्विक रखना।। (1)

द्रव्य में भोजन सुयोग्य रखना।
वात पित्त कफकर आहार न लेना।
खटाई बेसन मटर न लेना।
लाल मिर्ची व उड़द भी न लेना।। (2)

गैस से बना जो भोजन न लेना
हरी सब्जी व दूध फल लेना।
सूखा मेवा व मूंग दाल लेना।

लवण बूरा सदा कम ही लेना।। (3)
सड़ा-गला व दूष्पक्वभोजन।
रूखा सूखा या अताजा भोजन।
ऋतु के अयोग्य अपथ्य भोजन
कभी न स्वीकारो पापी का भोजन।। (4)
प्रदूषणों से रहित क्षेत्रों में।
विहार निवास करो हे प्रयत्न से।
विविध रोग होते है प्रदूषणों से।
तन-मन व आत्मिक भावों में।। (5)
पंचमकाल है हुण्डा अवसर्पणी का।
संहनन है अति दुर्बलता का।
वर्षा शर्दी व गर्मी से बचना।
अति सर्वत्र भी वर्जित करना।। (6)
शुचि व समता भाव को रखना।
समस्त स्वास्थ्य की जड़ है भावना।
इसी हेतु सर्व कषाय जीतना।
निस्पृह एकान्त मौन की साधना।। (7)
ख्याति पूजा से दूर ही रहना।
धन-जन-मान की इच्छा न करना।

समाज-जाल से बचते रहना।
कनकनन्दी की यही है साधना।। (8)

सेमारी 8/10/2011 रात्रि 11.19

"आध्यात्म चिन्तन/द्वादश अनुप्रेक्षा" (9)

तर्ज :- (1. छोटी-छोटी गैया... 2. हे परम कृपालु)

<u>प्रस्तावना</u>

सतत चिन्तनीय सत्य तथ्य का,
बन्ध-मोक्ष और पुण्य-पाप का।।
कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य ज्ञान-ज्ञेय का,
ग्रहणीय त्यजनीय आत्म तत्त्व का।।
अशुभ शुभ और शुद्ध भाव का,
व्यवहार-निश्चय से अनुप्रेक्षा का।। (टेक)
द्रव्य गुण पर्यायों का चिन्तन करो,
उत्पाद-व्यय-ध्रौव्य युक्त से करो।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव सहित करो,
कार्य-कारण भाव जोड़ा भी करो।
सनम्र सत्यग्राही हुआ भी करो,
आत्म विशुद्धि भाव सतत धरो।। सतत...

(1) ''सापेक्ष से द्रव्य अनित्य तथा नित्य''

पर्याय दृष्टि से द्रव्य अनित्य होता,
द्रव्य दृष्टि से शाश्वत नित्य होता।
कर्म जन्य अवस्थायें अनित्य होती,
निगोदिया से इन्द्रत्व भी होता।।
तन-मन-धन-जन अनित्य होते,
शुद्धात्मा गुण सर्व नित्य ही होते।। सतत...

(2) कर्मजन्य अवस्थायें अशरण तो शुद्धात्मा ही शरण

अनित्य पर्याय अशरण ही होती,
शाश्वत ध्रुव आत्म शरण होती।
तन मन धन जन की शरण त्यागो,
स्व शुद्धात्मा की शरण भजो।
सत्य समता सुख स्व शुद्धात्मा भाव,
इनके सेवन से ही शरण भाव।।

(3) ''विभाव ही संसार तो स्वभाव ही मोक्ष''

विभाव से आस्रव बन्ध होता,
जिससे संसारी दुःखी होता।
स्वभाव से संवर निर्जरा होती,
जिससे अन्त में मुक्ति होती।।

राग-द्वेष-मोह विभाव जानो,
इनसे विलोम स्वभाव मानो।। सतत...

(4) स्वगुण ही अपना/''एकत्व''

स्व-गुण पर्याय ही अपने होते,
निज छोड़कर कहीं न जाते।
इसलिए स्वयं के विकास हेतु,
स्व गुण के विकास ही प्रमुख हेतु।
स्व-ज्ञान-दर्शन-सुख-वीर्यादि गुण,
इसी में ही एकत्व है निज गुण।। सतत...

(5) ''स्व-गुणों के अतिरिक्त अन्य पराया अन्यत्व''

स्व-गुणों के अतिरिक्त सर्व विभाव,
क्रोध-मान-माया-लोभ-मोहादि भाव।
पराया होने से नहीं स्वभाव,
विभाव ही समस्त दुःख भाव।
शाश्वतिक सुख हेतु अन्य भाव त्यागो,
अन्य भाव त्याग हेतु स्वभाव ध्यायो।। सतत...

(6) ''अशुद्ध भाव से अशुचिता तथा शुद्ध से शुचिता''

शुद्धात्मा स्वभाव छोड़ सर्व विभाव,

अशुचि है क्रोध-मान मायादि भाव।
इससे ही अशुभ कर्म बन्धन होते,
अनेक कुयोनियों में जन्म भी होते।
तन-मन-आत्मा में रोग भी होते,
विभिन्न दुःखों को जीव सहते।। सतत...

(7) ''आत्म प्रदेशों की चंचलता से आस्रव''

आत्म प्रदेशों का कंपन है आस्रव,
संसार चक्रमण का प्रमुख भाव।
मन-वचन-काय से होता प्रभाव,
आत्म प्रदेशों में होता क्षोभ भाव।।
क्षोभ से आकर्षित होते अनन्त कर्म,
संसार भ्रमण का प्रमुख मर्म।। सतत...

(8) ''आत्म प्रदेशों की स्थिरता से संवर''

आत्म प्रदेशों की स्थिरता है संवर,
मोक्ष प्राप्त करने का प्रमुख द्वार।
गुप्ति समिति, धर्मादि से होता संवर,
संवरण होता है कर्म का द्वार।
स्वात्मलीनता से स्थिरता आती,

जिससे पवित्र आत्मा हो जाती।। सतत...

(9) ''संवर पूर्वक आंशिक कर्म क्षय निर्जरा''

आंशिक कर्म क्षय होता जो संवर युत,
सो निर्जरा है मोक्ष हेतुक।
अविपाक निर्जरा होती आस्रव युत,
अविपाक निर्जरा है मोक्ष हेतुक।
तपस्या से विशेषतः होती निर्जरा,
रत्नत्रय युक्त जो होती तपस्या।। सतत...

(10) ''मोक्ष प्राप्ति के बिना सर्वलोक में भ्रमण''

स्वात्मोपलब्धि बिना अशुद्ध जीव,
भ्रमण करता है सम्पूर्ण लोक।
इस हेतु घूमता सम्पूर्ण लोक,
जिससे पाता है अनन्त दुःख।
स्वात्मोपलब्धि से अनन्त सुख,
संसारी जीव से अनन्त सुख।। सतत...

(11) सर्वोत्तम उपलब्धि है बोधि

अति ही दुर्लभ है मानव जन्म,
मानव में पुनः ज्ञानी सम्यक्त्व पूर्ण।

इससे भी दुर्लभ है चारित्र युक्त,
इससे भी दुर्लभ है विशुद्धि युक्त
विशुद्ध युक्त समाधि अति दुर्लभ,
इसी से प्राप्त होता बोधि दुर्लभ।। सतत...

(12) "आध्यात्म धर्म ही परम धर्म"

वस्तु स्वभाव है द्रव्य सामान्य धर्म,
अनन्त सुखरूप आध्यात्म धर्म।
इसकी प्राप्ति हेतु रत्नत्रय भी धर्म,
उत्तम क्षमादि दशविध धर्म।
समता पवित्रता है आत्मिक धर्म,
जिससे मिलता है अनन्त शर्म।। सतत...
इह विधि चिन्तन से होता है ज्ञान,
वैराग्य युक्त चारित्र भेद विज्ञान।
आत्म-परमात्म का विज्ञान होता
अणु से ब्रह्माण्ड तक सुज्ञान होता।
'कनकनन्दी' करता अनुप्रेक्षण,
सुख के इच्छुक करें अनुप्रेक्षण।। सतत...

सेमारी- 9/10/2011 रात्रि 10.38

आध्यात्मिक सोपान (10)

गुणस्थान गीत

(संसार एवं मोक्ष की यात्रा)

तर्ज :- (चौपाई...)

बीज से बीज की यात्रा होती...
बीज से वृक्ष तथा बीज की स्थिति।
तथा ही जीव की यात्रा होती...
संसार भ्रमण या मोक्ष की स्थिति।।... स्थायी...

मोहादि बीज से संसार-स्थिति...
आध्यात्म-भाव से मोक्ष की स्थिति।
मोहादि से कर्म आस्रव होता...
जिससे संसार-भ्रमण होता।।... (1)

आध्यात्म-भाव से कर्म निरोध...
जिससे होता है आत्म-विकास।
आत्म-निर्मलता के अंशानुसार...
आत्मा के विकास तदनुसार।।... (2)

(1) मिथ्यात्व गुणस्थान- (पूर्णतः आध्यात्मिक सुप्तावस्था)

चौदह स्थानों में विभक्त स्थिति... गुणस्थानों के रूप में होती।
आत्मा की अत्यन्त पतन अवस्था... मिथ्यात्व रूप में है व्यवस्था।।...(3)

आत्म-अनात्म का होता न ज्ञान/(भान)... शरीर भोग में होता है लीन।
चारों गति के जीव इसी स्थान में... अनन्त जीव होते आदिकाल से।।...(4)

(2) सासादन गुणस्थान- (आध्यात्मिक जागृति से पतितावस्था)

सम्यक्त्व गुण से पतन होने से... मिथ्यात्व स्थान के पतन मध्य में।
होता जो अवस्थान आत्मा की परिणति... वह है सासादन गुण की स्थिति।।...(5)

(3) मिश्र गुणस्थान- (आध्यात्मिक जागृति की मिश्रावस्था)

सम्यक्त्व या मिथ्या जहाँ स्थिति... दोनों अवस्था की मिश्रण स्थिति।
आत्म-अनात्म के भेदज्ञान से... न होती स्थिति एक भाव में।।... (6)

(4) अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान- (आध्यात्मिक जागृति की प्राथमिक अवस्था)

मोह के यथायोग्य क्षयादि योगे... होता है श्रद्धान आत्म-अनात्मे।
अप्रत्याखान की कषाय योग से... विरक्त न होता हिंसा भोग से।।... (7)

(5) देशविरत गुणस्थान- (आंशिक संयम-अवस्था)

अप्रत्याख्यान की कषाय अनुदये... आंशिक विरक्त हिंसा भोग से।
प्रथम प्रतिमा से आर्यिका पर्यन्त... होता है यह स्थान विविध भेदयुत।।...(8)

(6) प्रमत्त गुणस्थान- (सकल-संयम की प्रारम्भ-अवस्था)

प्रत्याख्यान की कषाय अनुदये... सम्पूर्ण विरक्त हिंसा भोग से।
संज्वलन की कषाय उदय से... व्यक्त-अव्यक्त प्रमाद अन्त में।।... (9)

(7) अप्रमत्त गुणस्थान- (आत्मलीनता की प्रथम-अवस्था)

संज्वलन कषाय के मन्द उदय से... आत्मलीनता होती अप्रमत्त से।
स्वस्थान अप्रमत्त धर्मध्यानमय... सातिशय अप्रमत्त शुक्ल ध्यानमय।।...(10)

(8) अपूर्वकरण गुणस्थान- (अभूतपूर्व आध्यात्मिक अनुभूति)

अनन्त विशुद्धि युत (जब) होता परिणाम... अभूतपूर्व आत्मिक होता परिणाम।
जिससे आत्मिक शक्ति होती तीव्रतम... आत्मश्रेणी आरोहण होता है सघन।।...(11)

(9) अनिवृत्तिकरण गुणस्थान- (प्रत्येक समय में परिणाम वृद्धि)

विशुद्धि वृद्धि से होती शुक्लध्यान वृद्धि... जिससे परिणाम की होती विशुद्धि।
प्रत्येक समय का परिणाम होता श्रेष्ठ... ध्यान की अग्नि से भस्म कर्म काष्ठ।।...(12)

(10) सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान- (लोभ की क्षीण-सूक्ष्म-अवस्था)

लोभ कषाय जब होती अति क्षीण... सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान होता जान।
यथा अतिमन्द वायु न उड़ाये कण... तथा अतिसूक्ष्म लोभ होता गुणस्थान।।...(12)

(11) उपशान्त कषाय गुणस्थान- (कषायों का पूर्णतःशान्त होना)

निर्मली फल से युक्त जल के समान... उपशान्त कषाय से होता गुणस्थान।

अत्यन्त निर्मल परिणाम यथाख्यात... शुद्धात्मा के समान है परिणाम जात।।...(14)

(12) क्षीणकषाय गुणस्थान- (कषायों के सम्पूर्ण क्षय से उत्पन्न परिणाम)

सम्पूर्ण कषायों का जब होता पूर्ण क्षय... क्षायिक निर्मलभाव होता है उदय।
निर्मल जल है स्थित स्फटिक पात्र में... तथा ही निर्मल परिणाम है आत्मामें।।...(15)

(13) सयोग केवली गुणस्थान- (सशरीर अनन्तज्ञानादि युक्त भगवान्)

सम्पूर्ण घाति कर्मों का होता जब क्षय... अनन्त चतुष्टय का होता है उदय।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख वीर्य मय... दिव्य शरीर से युक्त होता सर्वोदय।।...(16)

विश्वहित हेतु करते उपदेश... सर्वज्ञान-विज्ञान का करते प्रकाश।
अनेकान्तमय देते सन्देश... सत्य अहिंसामय दिव्य सन्देश।।...(17)

(14) अयोग केवली गुणस्थान- (निष्कम्प केवली भगवान्)

मन वच काय के कम्पन रहित... अन्त के समय में होते हैं अर्हत्।
सम्पूर्ण कर्मास्रव होता तिरोहित... शैलेश अवस्था को पाते हैं अर्हत्।।...(18)

(15) गुणस्थान से परे सिद्ध भगवान्- (जीवों की सर्वोच्च शुद्धावस्था)

अष्ट कर्म नष्ट से होते हैं शुद्ध जीव...
अजर अमर अविकारी आत्म भाव।

सच्चिदानन्दमय सत्य शिव सुन्दर...
अनन्त ज्ञान सुख वीर्यादि भण्डार।।...(19)

सेमारी, दि=18/10/2011, प्रातः 8.00 बजे (प्रायः)

परम स्वतंत्रता के नेता बनने की भावना (11)
(तीर्थंकर बनने योग्य 16 भावनाएँ)

तर्ज :- (छोटी छोटी गैया छोटे-2 ग्वाल...)

सोलह भाव से सोना कुन्दन होता,
सोलह भाव से जीव तीर्थेश होता।
कुभाव से संसार भ्रमण होता,
सुभाव से जीव शिव पद पाता।।...(टेक)

1. **दर्शनविशुद्धि भावना :-**
(सत्य-असत्य/आत्मा-परमात्मा की दृढ़-प्रतीति।)
दर्शन विशुद्धि जब भावना होती,
अष्टअंग युक्त श्रद्धा भी होती।
शुद्धात्मा तत्त्व की होती प्रतीति,
सत्य-असत्य की रुचि भी होती।। (1)
2. **विनयसम्पन्नता भावनाः-**

(आध्यात्मिक गुण-गुणी प्रति विनम्रता/सनम्र सत्यग्राहिता)
गुण-गुणी में होता विनम्रभाव,
देवशास्त्र गुरु में आदर भाव।
सनम्र सत्यग्राही होता है जीव,
विनयसम्पन्नता होता है भाव।। (2)

3. **शील एवं व्रतों का निरतिचार पालनः-**
(स्व-आध्यात्मिक कर्त्तव्यों का परिपूर्ण-पालन)
अहिंसा सत्य-अचौर्य परिपालन,
परिग्रह त्याग तथा ब्रह्मरमण।
क्रोधादि कषायों का परिमार्जन,
होता है शीलव्रतों (का) परिपालन।। (3)

4. **अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगः-**
(सतत सद्ज्ञान में उपयोग लगाना)
सतत ज्ञान में उपयोग लगाना,
असत् उपयोग से स्वयं को हटाना।
हित प्राप्ति अहित परिहार करना,
अनात्म वस्तु से माध्यस्थ रहना।। (4)

5. **सतत संवेग भावनाः-**
(सांसारिक दुःखों से भयभीत रहना)

संसार है कर्मबन्ध, बन्धन है दुःख,
बन्धन में सर्व दुःख, सुख या दुःख।
संसार शरीर भोगों से विरक्त मना,
आत्म चिन्तन तत्पर संवेग भावना।। (5)

6. **शक्ति के अनुसार त्याग भावनाः-**
(आध्यात्मिक वैभव के लिए सांसारिक वैभव त्याग)
आत्मिक विकास हेतु भौतिक त्याग,
शक्ति के अनुसार विधेय काम/त्याग।
इसके बिना आत्मा का न विकास होता,
बीज के भेदन बिना वृक्ष न होता।। (6)

7. **शक्ति के अनुसार तप भावनाः-**
(आध्यात्मिक विकास के लिए तृष्णा त्याग)
शक्ति के अनुसार तप विधेय,
अन्तरंग तप हेतु बाह्य विधेय,
सांसारिक तृष्णा त्याग अन्तः तपस्या,
इसी हेतु बाह्य त्याग तपस्या।। (7)

8. **साधु समाधि भावनाः-**
(समाधि साधक साधुओं की सेवा व्यवस्था)
आत्मिक शुद्धि निमित्त साधु समाधि,

जो साधु साधनारत महावैरागी।
उनकी वैयावृत्ति होती महोपकारी,
सहस्र मन्दिर निर्माण सम पुण्यकारी।। (8)

9. **वैयावृत्ति भावनाः-**
(आध्यात्मिक साधनारत साधुओं की सेवा-व्यवस्था)
रत्नत्रय साधनारत साधुगण की,
सतत करणीय है वैयावृत्ति भी।
साधु तो जीवन्तमूर्ति रत्नत्रय की,
साधु की जो सेवा वही सच्ची धर्म की।। (9)

10. **अर्हन्त भक्ति भावनाः-**
(भगवत् गुण प्राप्ति के लिए भगवत् भक्ति)
तद्गुण लब्धये भगवत् भक्ति,
करणीय सदा निष्पृह वृत्ति/(भक्ति)।
भक्त के भावी रूप अरहन्त देव,
भक्ति से बने अरिहन्त देव।। (10)

11. **आचार्य भक्ति भावनाः-**
(आचार्य के आचरण प्राप्ति हेतु आचार्य भक्ति)
आचार्य है आचरण धर्म प्रधान,
आचार्य (की) भक्ति से आचरण ग्रहण।

चारित्र निश्चय से धर्म ही जानो,
आचारवान् निश्चय से धार्मिक मानो।। (11)

12. **बहुश्रुत-उपाध्याय भक्तिः-**
(ज्ञानदाता गुरुदेव की भक्ति से ज्ञान प्राप्ति)
ज्ञानी गुरु की भक्ति ज्ञान प्राप्ति हेतु,
ज्ञान प्राप्ति सदा मोक्ष के हेतु।
ज्ञान की भक्ति से होती ज्ञान की भक्ति,
ज्ञान की भक्ति से होती मोक्ष की प्राप्ति।। (12)

13. **प्रवचन भक्ति भावनाः-**
(सर्वज्ञ के हितोपदेश की भक्ति)
भक्ति करणीय सदा प्रवचन की,
विश्व हितंकर दिव्य ध्वनि की।
आत्म अनात्म के भेद-ज्ञान की,
सर्वज्ञ से खिरी दिव्यगीरा की।। (13)

14. **आवश्यक-क्रियाओं का परिपालनः-**
(निर्दोष रूप से आध्यात्मिक-कर्त्तव्य पालन)
कर्त्तव्य पालन में रहे सदा तत्पर,
मन-वचन-काय से निरतिचार।
कर्त्तव्य से कर्म का होता निर्माण,

कर्त्तव्य से स्वयं का होता निर्वाण।। (14)

15. **प्रभावना की भावनाः-**

(स्व-पर विश्व में पवित्र भाव की भावना)

पवित्र भावना है सच्ची प्रभावना,
सनम्र सत्यग्राही साम्य भावना।
क्षमादि भाव की हो प्रभावना,
ऐसी भावना धर्म प्रभावना।। (15)

16. **वात्सल्य भावनाः-**

(निःस्वार्थ प्रेम भावना)

निःस्वार्थ भाव युक्त हो प्रेम भावना,
उसे कहते हैं वात्सल्य भावना।
वात्सल्य में होती पवित्र भावना,
सुधर्मी के प्रति प्रमोद भावना।। (16)

भावना से भावित होता है जब जीव,
पाप कर्म नशे पुण्य आस्रव।
आत्म साधना से बने तीर्थेश,
अन्त में बने मोक्ष के ईश।। (17)

'कनकनन्दी' तो सदा भावना भाये,

सच्ची भावना से विश्व मंगल गाये।
आत्महित युत हो विश्व के हित,
आत्म शान्ति युत हो समस्त हित।। (18)

सेमारी, दि= 23/10/2011, प्रातः 9.20

जैन धर्म की अति विशेषताएँ (12)

सुनो सुनो हे दुनियाँ वालों!... जैन धर्म की विशिष्ट गाथा।
जिसे सुनकर तुम जान पाओगे... जैन धर्म की महान् शिक्षा/(आत्मा)!
(स्थायी/टेक)...

जैन धर्म है प्राकृतिक धर्म, वस्तु स्वभाव धर्म कहता है।
प्रत्येक द्रव्य का जो-जो स्वभाव, उसका धर्म वह कहता है।।...(1)

जीव का धर्म है चेतन रूप, सच्चिदानन्द स्वरूप है।
ज्ञान दर्श सुख वीर्य-मय, अहिंसा क्षमादि स्वरूप है।।... (2)

द्रव्य-व्यवस्था में अति विशेषता, धर्म अधर्म द्रव्य द्वय है।
गति स्थिति में सहायक होते, जीव पुद्गल जब प्रमुख/(उपादान/
मुख्य) होते।।... (3)

अनेकान्त है सत्य निर्णायक, स्याद्वाद है सत्य कथक।
हर द्रव्य है अनन्त गुणमय, हर द्रव्य है अनेकान्तमय।।... (4)

विश्व है अनादि अनन्त मान, अकृत्रिम षड्द्रव्य प्रमाण।

कोई न कर्त्ता हर्त्ता नियन्ता, उत्पाद व्यय ध्रौव्य संयुक्ता।।... (5)
जीव पुद्गल धर्म अधर्म काल, अनन्त आकाश द्रव्य संकुल।
छहों द्रव्य भी अनादि अनन्त, अकृत्रिम शाश्वत परिणमनशील।।...(6)
द्रव्य क्षेत्र काल भाव न कर्म, जिसमें जीवों का निहित मर्म।
संसारी जीवों के जन्म-मरण, सुख-दुःखादि में है यह मर्म।।...(7)
द्रव्य-भाव-नोकर्म त्रिविध, अष्ट अष्टोत्तर शत विविध।
संख्य असंख्य भेद प्रभेद, कर्म परमाणु से अनन्त भेद।।...(8)
भाव से कर्माणु बन्धन होते, कर्म/(बन्ध) से विविध रूप धरते।
भाव से कर्मों से मोक्ष भी होते, भाव अशुद्ध-शुद्ध से होते।।... (9)
अशुभ शुभ शुद्ध भावों से, निर्माण आध्यात्म सोपान होते।
चौदह गुणस्थान इसे कहते, आत्म विकास से मोक्ष/(निर्वाण) पाते।।...(10)
जीव ही है जिनवर बनता, बीज ही जैसा वृक्ष बनता।
आत्मा ही परमात्मा बनता, बन्ध से जब मुक्त हो जाता।।...(11)
धारण करे धर्म उसका होता, नर नारकी या पशु देवता।
सत्य-विश्वास व पवित्र भाव, जैनी बनने का सर्वोच्च भाव।।...(12)
अलौकिक गणित अति विशेष, अणु से लेकर विश्व अशेष।
संख्यात असंख्यात अनन्त तक, प्रतिच्छेद से ब्रह्माण्ड तक।।...(13)
सप्त तत्त्व तथा नव पदार्थ, षट् लेश्या तथा जीव समास।
जन्मान्तर व मोक्ष की गति, मार्गणा स्थान क्रम उन्नति।।...(14)

अगुरुलघु है अति विचित्र, जिससे द्रव्य में बने स्थायित्व।
षड् गुणहानि अनन्त बने, शुद्ध द्रव्य में सतत बने।।... (15)
इत्यादि अनेक विशेष सत्य, जैनागम से करो प्रत्यक्ष।
संक्षिप्त से यहाँ वर्णन किया, 'कनकनन्दी' ने जो कुछ पाया।।...(16)
सेमारी, दि= 25/10/2011, रात्रि 9.27 (पूर्व दीपावली, चतुर्दशी)

कार्य-कारण सिद्धान्त (Cause & action) (13)
विश्व के हर कार्य के कारण (निमित्त-उपादान मीमांसा)

रागः- (ना कजरे की धार...)

न निमित्तों से काम.... न निमित्त बिना काम
न उपादान से काम.... न बिना उपादान काम
यह अनेकान्त का काम...2...(टेक)
द्रव्य क्षेत्र काल भाव... सम्यक् समवाय उपाय...2
इसके बिना न काम... संसार या मोक्ष धाम... न निमित्तों... (1)
भात बनने हेतु... चावल होना ही चाहिये...2
पानी आग व बर्तन... संयोग सही चाहिये... न निमित्तों... (2)
वृक्ष बनने हेतु... बीज होना चाहिए...2
पानी वायु रश्मि... सही योग होना चाहिये... न निमित्तों... (3)

मोक्ष प्राप्ति हेतु... भव्य होना चाहिये...2
द्रव्य क्षेत्र काल भाव... सही होना चाहिये... न निमित्तों... (4)
भव्य भी हो नारकी... न मोक्ष प्राप्त करता...2
क्षायिक सम्यक्त्वी भी... मोक्ष नहीं पाता... न निमित्तों... (5)
तीर्थंकर प्रकृति भी... सहित देव नारकी...2
मोक्ष न प्राप्त करते... बाह्य निमित्त अप्राप्ति... न निमित्तों... (6)
ऐसा ही भोग भूमिज... आर्य व पशु-पक्षी...2
सम्पूर्ण संयोग बिना... न करते हैं मोक्ष प्राप्ति... न निमित्तों... (7)
ऐसे ही संसार के... समस्त कार्यों में...2
होता है यह नियम... बिना अपवादों से... न निमित्तों... (8)
इसे ही कहते हैं... कार्य कारण भाव...2
अनेकान्त या सापेक्ष... चतुः आयाम के भाव... न निमित्तों... (9)
यह वैश्विक सिद्धान्त... सार्वभौम रूप में...2
इसी से संचालित है... विश्व के हर काम... न निमित्तों... (10)
कनकनन्दी सदा ही... माने यह सिद्धान्त...2
इसके बिना न काम... होता नहीं नितान्त... न निमित्तों... (11)

सेमारी, दि= 12/10/2011, मध्याह्न 2.50

ब्रह्माण्ड का पूर्णज्ञान नहीं है वैज्ञानिकों को (ब्रह्माण्डिय व्यवस्था एवं मोक्ष-अवस्था) (14)

(जैनधर्म में वर्णित ब्रह्माण्ड एवं वैज्ञानिक अवधारणा के ब्रह्माण्ड की समीक्षा)

राग :- (छोटी छोटी गैया...) आगम व विज्ञान सम्बन्धी कविता

जीव-अजीव की शक्ति पहिचानों, वैश्विक व्यवस्था शिवपद जानो।
अनन्त शक्ति युत हर द्रव्य जानों, अनादि अनन्त शाश्वतिक मानो।।
... (स्थायी/टेक)...

उत्पाद व्यय व ध्रौव्य से युक्त, हर द्रव्य है गुण पर्याय युक्त।
अकृत्रिम तथा स्वयंभू स्वतन्त्र, अतः अविनाशी परम सत्य।। (1)

अस्तित्व वस्तुत्व द्रव्यत्व गुण, प्रमेयत्व अगुरुलघुत्व गुण।
प्रत्येक द्रव्य होते हैं शाश्वतिक, हर गुण अनन्त शक्त्यांश युत।। (2)

हर द्रव्य में होता है प्रदेशत्व गुण, जिससे द्रव्य होता आकारवान्।
जीव में ही होता है चेतन गुण, अजीव में नहीं है चेतन गुण।। (3)

षट् द्रव्यमय होता है ब्रह्माण्ड/(विश्व), जीव पुद्गल व धर्म अधर्म।
काल आकाशमय होता ब्रह्माण्ड, मूर्तिक अमूर्तिकमय ब्रह्माण्ड।। (4)

जीव के अतिरिक्त पाँचों ही द्रव्य, चेतना रहित अजीव द्रव्य।
पुद्गल ही जानों मूर्तिक द्रव्य, स्पर्श रस गन्ध वर्णादि द्रव्य।। (5)

ज्ञान दर्श सुख वीर्य विशेष गुण, जीव द्रव्य का यह है लक्षण।
गति सहायक धर्म द्रव्य है जानो, स्थिति सहायक है अधर्म मानो।। (6)

षट् द्रव्यमय होता है लोकाकाश, इससे अतिरिक्त है अलोकाकाश।
असंख्य प्रदेशी लोकाकाश जानो, अनन्त प्रदेशी अलोकाकाश मानो।।(7)

लोकाकाश आकाश मध्य में स्थित, दशों दिशा में अनन्ताकाश स्थित।
तीन सै तैतालीस घन राजू प्रमाण, असंख्य प्रकाश वर्ष जानो प्रमाण।।(8)

विज्ञान माने विश्व को पुद्गलमय, पदार्थ ऊर्जा अन्तरिक्षमय।
महाविस्फोट से बना है विश्व, पदार्थ आदि काल अशेष।। (9)

हार्किंग का मत लगे कोरी कल्पना, असत्य से हुई विश्व रचना।
असत्य से सिंगुलेरेटी उत्पन्न माना, सिंगुलेरेटी विस्फोट से ब्रह्माण्ड माना।।(10)

महाविस्फोट से काल उत्पन्न, अन्तरिक्ष भी कोरी कल्पना पूर्ण।
असत्य से प्रोटोन को माने उत्पन्न, असत्य से माने विश्व भी उत्पन्न।।(11)

विज्ञानी न जाने पूर्ण ब्रह्माण्ड ज्ञान, महाविस्फोट का पूर्ण प्रमाण।
क्यों कैसे हुआ यह विस्फोट, प्रति-ब्रह्माण्ड कहाँ है स्थित।।(12)

एन्टीमैटर तथा डार्क मैटर, डार्क एनर्जी विश्व समानान्तर।
ब्रह्माण्डे स्थित अन्य जीव संसार, नहीं जाना है वैज्ञानिक संसार।। (13)

विज्ञान को अज्ञात है जीव-स्वरूप, चेतनामय व अमूर्तरूप।
धर्माधर्म काल आकाश ज्ञान, विज्ञान को नहीं यथार्थ ज्ञान।। (14)

अनन्तज्ञानी न होते विज्ञानी, अतः विज्ञानी न वैश्विक ज्ञानी।
सर्वज्ञ ही जाने विश्व का ज्ञान, अल्पज्ञ न जाने वैश्विक ज्ञान।। (15)

सर्वज्ञ बनने का उपाय/(साधना) कर, राग-द्वेष-मोह का विनाश
(संहार, विध्वंस) कर।
समस्त कर्मों/(बन्धनों) का विनाश कर, मोक्ष अवस्था को प्राप्त भी कर।।(16)

सर्वज्ञ द्वारा जो ज्ञात ब्रह्माण्ड, आचार्य द्वारा जो लिखा ब्रह्माण्ड।
उससे प्राप्त जो हुआ है ज्ञान, कविता द्वारा 'कनक' किया बखान/(वर्णन)।।(17)

सेमारी, दि= 24/10/2011, रात्रि 10.45

"संगठन में शक्ति, विघटन में क्षति" (15)

तर्ज :- (यमुना किनारे श्याम...)

एकता के लाभों को जाना भी करो, एकता के भावों को भाया भी करो।
एकता से जीवन जिया भी करो, एकता से काम किया भी करो।।

संगठन में शक्ति समाहित है, विघटन में शक्ति तिरोहित है।। (टेक)...

गुण पर्ययवत् द्रव्यं अन्तः एकता, गुण एवं पर्यायों की सही एकता।
अनन्त शक्ति इससे प्रगट होती, सार्वभौमिक सिद्धान्त है वैश्विक स्थिति
आत्मिक गुण पर्यायों की एकता, आत्मिक शक्ति प्रगट अंतरंग एकता...

अंतरंग सहित बहिरंग एकता, कार्य सम्पादन का सही तरीका।
परिवार से विश्व व्यवस्था हेतु, जीवों के सह अवस्थान व्यवस्था हेतु।।
परस्परोपग्रहो वीर ने कहा, विज्ञान ने भी इकोसिस्टम कहा।।...

रत्नत्रय की एकता ही मोक्ष का मार्ग, पृथक्-पृथक् न बने है मार्ग।
द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव समन्वय से, कार्य सम्पादन होता सही रूप से।।
ताना बाना से वस्त्र तैयार होता, कार्य-कारण की यही व्यवस्था।।...

बिंदु की एकता से सिंधु बनता, पदों की एकता से ग्रंथ बनता।
वृक्षों के समुदाय से उपवन बनता, रेशा की एकता से रस्सा बनता।।
समाज भी एकता से बनता, मोतियों के समूह से हार बनता।।...

मधुमक्खी (चींटी) एकता से काम करती, दीमक चींटी की एकता जग प्रसिद्धि।
एकता से चिड़ियाँ जाल उड़ा ले जाती, एकता से दीमक बामी बनाती।।
ईटों की एकता से घर बनता, एकता से मधुमक्खी का छत्ता बनता...

विघटन से भारत गुलाम रहा, संगठन से भारत स्वतंत्र हुआ।

स्नेह सहयोग से एकता होती, स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष से एकता जाती।।
'कनकनन्दी' सदा एकता प्रेमी, मानव समाज बने एकता प्रेमी।।...

सेमारी, दि= 10/10/2011, रात्रि 11.39

"वैश्विक स्वास्थ्य हेतु भावना" (16)

(विनाशकारी भावनाओं को त्यागों मानव)

(मानव व्यर्थ में ही अधिक पाप एवं रोगों को निमंत्रण देता है)

तर्ज :- (आत्मशक्ति से ओत प्रोत...) -आचार्य कनकनन्दी

व्यर्थ के विनाशकारी भावों को, त्याग करो हे मानव-2
इनसे बचने से बच जायेगा, रोग पाप व तनाव-2 (टेक)
इनसे बचने के उपाय सत्य, संयम साम्य भाव
क्षमा दया व सहज सरलता, शौच धैर्य व आत्मिक भाव
क्रोध मान माया लोभ असंयम, ईर्ष्या घृणा भोग-राग-2
निन्दा असत्य व वाचालता तथा, फैशन-व्यसन मन के रोग-2... (1)

इनसे होता समय शक्ति, साधन धन का दुरुपयोग
पाप बन्ध व मानसिक रोग, होते विभिन्न रोग,
"क्रोध" से लीवर गॉलब्लेडर में, होते हैं नाना रोग-2
प्रेम नाश तनाव झगड़ा विवेक, नाश व पाप संयोग-2... (2)

''तनाव'' ''चिन्ता'' से पैनक्रियाज में, होते हैं नाना रोग,
बुद्धि विनाश शरीरे दर्द, रक्तचाप व हृदय रोग,
''अधीरता'' व ''आवेश'' से, दुर्बल दिल व आँत-2
सही न होते काम जगत में, होता है दुःखद अन्त-2... (3)

''भय'' से होती है गुर्दे व, मूत्राशय में भी हानि,
मन में होता है अस्थिर भाव, चिन्तन काम में हानि
''दुःख'' से फेफड़े बड़ी आँत की, कार्य क्षमता है घटती-2
शरीर इन्द्रियाँ मन आत्मा में, अनेक कमियाँ घेरती-2... (4)

''विचारों से परेशान'' व्यक्ति, दान उपकार नहीं करते,
सुचारू रूप से काम न होते, अनेक संक्लेश आ घेरते,
''लोभ'' से मलत्याग सही न होता, न स्वेद विसर्जन होता-2
फेफड़े ठीक से श्वास न छोड़े, जब मानव लोभ न त्यागे-2... (5)

''लोभ'' से चर्बी संचय होती, जिसे मोटापा बढ़ता,
डायबिटीज जोड़ा में दर्द, आदि दुःखों को सहता,
तन मन जब उद्दण्ड होते, असंयम काम होते-2
फैशन व्यसन मर्यादा हीन, लड़ाई-झगड़ा भी होते-2... (6)

''असत्य'' से तेज होता है नष्ट, जीवन शक्ति विनष्ट,
दिल-दिमाग को लगती चोट, लकवा से शरीर नष्ट,
पागलपन व पथरी होता, संक्लेश तनाव भय होता-2

व्यग्रता ग्लानि व दुःख भी होता, दिमाग में भारी पना-2... (7)

''अहं'' से होता विनय नाश, ज्ञान न होता विकास,
सरल सहज भाव न होता, अहंग्रन्थी का होता विकास,
दंभ से होती कफ की वृद्धि, देह में होती स्थूलता-2
गैस समस्या उत्पन्न होती, इन्द्रियें शक्ति भी क्षीण-2... (8)

ईर्ष्या से पित्त की वृद्धि जो, इन्द्रियाँ-शक्ति भी क्षीण,
लीवर खराबी जलन होती, हृदय दुर्बल बुद्धि,
अन्य की प्रगति नहीं सुहाती, प्रशंसा सुन दाह होती-2
दूसरों के पतन की कामना होती, सच्चे से न प्रीत होती-2... (9)

''माया'' से मानव होता चिन्तित, अप्रगट हेतु प्रयत्न
भोजन सही न पाचन होता, कब्जियत से भी रोग अन्य
मल-मूत्र त्याग देरी से होता, दुर्गन्धी से मुँह भरा रहता-2
माया प्रगट तो होता अवश्य, पाप व दण्ड भी मिलता-2... (10)

क्रोधादि भाव से ''हिंसा'' होती, जिससे उक्त समस्या होती,
क्रिया की प्रतिक्रिया अवश्य होती, दृष्टि से सृष्टि उत्पन्न होती,
''दुःखमेव वा'' वीर ने कहा, समस्त पापों को दुःख कहा-2
''तृष्णा से दुःख'' बुद्ध ने कह चतुः आर्य सत्य में कहा-2... (11)

ईसा ने क्षमा सेवा अपनाया, सत्य अहिंसा गाँधी अपनाया,
''प्रज्ञा-अपराध'' त्याग बताया, आयुर्वेद में यह समझाया,

मनोविज्ञान अभी अपनाया, प्राचीन मत को सत्य ही पाया-2
होमिय पैथी में सोरा (टैक्सिन) कहा, मनरोग से उत्पन्न कहा-2..(12)
व्यायाम से शरीर बल बढ़ता, सात्विक आहार युक्त,
चिन्तन से मानसिक बल बढ़ता, शान्ति से आत्मिक सत्त्व,
स्व-पर-विश्व हित हेतु गूँथा, कविता रूप में गाथा-2
"कनकनन्दी" की भावना सदा, सर्व जीव पाये सुख सदा-2... (13)

सेमारी- 19/10/2011, प्रातः 8.55

"दीपावली पर्व दीवालीया पर्व न बने" (17)
(पावन दीपावली तथा पतित दीवाली)

दीपावली है प्रकाश पर्व, आत्मिक ज्योति जलाने का।
बाह्य दीप न दूर करता, आत्मिक मोह-अन्धकार का।। (टेक)

बाह्य दीप तो प्रतीक केवल, आत्मिक ज्योति जलाने का।
प्रतीक कभी न यथार्थ होता, दीप चित्र न देता।। (1)

दीपावली है निर्वाण पर्व, महावीर का मोक्ष गमन।
दीपावली है केवली पर्व, गणधर को हुआ केवल ज्ञान।। (2)

तुम भी स्वयं का निर्माण कर, निर्वाण योग्य स्वयं को कर।
तुम भी स्वयं का निर्माण कर्त्ता, निर्वाण योग्य स्वयं का कर्त्ता।। (3)

यह ही परम ज्योति पर्व, इसके निमित्त व्यवहार पर्व।
इसके अतिरिक्त पर्व दिवालीया, जड लक्ष्मी पूजन अन्य क्रिया।। (4)

निर्वाण लाडू आत्म-सुख प्रतीक, गोलाकार पूर्णता का प्रतीक।
मोक्ष लक्ष्मी का हो पूजन, आत्म विद्या का हो प्रयोजन (भजन)।। (5)

फटाके फोडना जूआ खेलना, मद्यपान व फैशन व्यसन।
क्रय-विक्रय व सट्टबाज, अश्लील गाना व नृत्यसाज।। (6)

यह सब हिंसा प्रदूषणकारी, सामाजिक कुरीति अहितकारी।
धन जन साधन समयहारी, व्यक्ति व राष्ट्र अहितकारी।। (7)

पर्व मनाओ पावन हेतु, पर्व न मनाओ पतित हेतु।
'कनकनन्दी' की यह रचना, आत्म ज्योति हेतु हुई रचना/(सर्जना)।।(8)

दीपोत्सव पर्व

सेमारी- दि. 26/10/2011 प्रातः 5.09

"हे मानव! वन गिरि का कृतघ्न न बन!"(18)
पर्यावरण सुरक्षागीत

राग :- (बंगला-ओडिसी...)
हे वनगिरि! हे लतागिरि... तुम्हारा उपकार भारी

तुमसे मिले फल औषध उपकारी
विविध सुमन की सुगन्धी मनोहारी
प्राणवायु भी मिले... शीतल छाया भारी... (स्थायी)...
+ तुमसे भी जीवित पशु व नर-नारी
कीट व पतंग समस्त वनचारी
पर्यावरण शुद्ध तुमसे अतिभारी
नीलकण्ठ के सम तुम हो विषहारी... हे वनगिरि... (1)
+ तुम्हारी गोद में वसे है वनचारी
तुम्हारे कारण होती है वर्षा भारी
तुम्हारे कारण मृदा की रक्षा भारी
तुम्हारे कारण पृथ्वी हरी भरी... हे वनगिरि... (2)
+ कृतघ्न मानव बना है अपकारी
तुम्हारा संहार करता अतिभारी
जिसके कारण आती आपदा अतिभारी
ग्लोबल वार्मिंग प्रदूषण भी भारी... हे वनगिरि... (3)
+ स्वर्णअण्डा लोभी के सम व्यवहारी
दोहन से अधिक शोषण करे भारी
प्रतिक्रिया फल से मानव हाहाकारी
दूरदृष्टि हीन से आपदा महामारी... हे वनगिरि... (4)

अभी तो मानव कृतज्ञ तुम बनो
तीर्थंकर बुद्ध का सत् उपदेश मानो
वैज्ञानिक सत्य को तुम तो अभी मानो
जीना है जो तुम्हें वनों को जीने दो... हे वनगिरि... (5)
+ 'कनकनन्दी' का आह्वान तुम सुनो
अहिंसा असंग्रह परोपकार करो
तृष्णा को त्यागकर आवश्यक से चलो
आवश्यक से चलकर आत्महित करो... हे वनगिरि... (6)

सेमारी, दि= 15/10/2011, प्रातः 9.32

विकृत मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानात्मक कविता "मानव नीयत से नियम बनाता है न कि सच्चाई के आधार पर" (19)

(मानव ! विकृति को छोड़कर संस्कृति अपनाओ)

तर्ज :- (बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत...)

मानव तू क्या न किया विकृत,
धर्म व न्याय राजनीति...2
नीयत तेरा नियम बनाये,

धर्मादि करे है विकृत।।...2 (टेक)
महापुरुष द्वारा शोधबोध व,
प्रचार-प्रसार (जो) सत्य।
उसे (भी) निज विकृत मन द्वारा
करता (है) सदा विकृत।। ...2 (1)
धर्म है सत्य समता शान्ति,
अहिंसा व अपरिग्रह।
क्षमा सहिष्णुता ब्रह्मचर्यमय
उदार वात्सल्य स्नेह।। ...2 (2)
तुमने इससे विपरीत किया,
कट्टरता व दुराग्रह।
संकीर्णता व ईर्ष्या द्वेषमय,
भेदभाव हिंसामय।। ...2 (3)
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि हेतु,
धर्म का किया प्रयोग।
मन्यमाना से तुमने किया,
धर्म का दुरुपयोग।
रूढ़िवादिता से धर्म पालकर,
मान लिया है उपयोग।। ...2 (4)

सुसामाजिक व्यवस्था निमित्त,
न्याय नीति का प्रयोजन।
सत्य समता निःस्वार्थ भाव से,
होता है दण्ड नियोजन।। ...2 (5)
इसी निमित्त राजनीति का भी ,
होता है सब प्रयोजन।
तथापि मानव इन सब (में) का,
करता है दुष्प्रयोजन।। ...2 (6)
उदर (के) समान व्यापार नीति,
शोषण नहीं है काम।
व्यापार नीति है उदर समान,
सम वितरण उसका काम।
शुद्ध सच्चा वस्तु विनिमय,
प्रामाणिक व उचित दाम।। ...2 (7)
करता मानव इसे विपरीत,
लोभ से करता वस्तु संचय।
मिलावट व शोषण द्वारा,
पाप करता अधिक सारा।। ...2 (8)
शिक्षा संस्कृति भाषा आदि,

मानव से होती विकृति।
जिससे होती समस्या जात,
जिससे मानव का होता घात।। ...2 (9)
'कनकनन्दी' तो करे आह्वान,
संस्कृति का करो सन्मान।
इसी से होगा तेरा विकास,
विकृति होता सदा विनाश।। ...2 (10)

सेमारी दि= 27/10/2011 मध्याह्न 3.15

"प्राचीन आचार्यों एवं ग्रन्थों का इतिहास" (20)
(प्राचीन ग्रन्थकार, आचार्य, ग्रन्थ एवं विषय)

आओ बच्चों तुम्हें बतायें, गाथा महा आचार्यों के
जिसने रचे महान् ग्रन्थ, ज्ञान और विज्ञान के
वन्दे सूरीवरम्... वन्दे गुरुवरम्...
ये वे आचार्य श्रेष्ठ हैं... जिनसे हम भी धन्य हुए
ज्ञान विज्ञान कला आदि... उनसे हमें प्राप्त हुए
शिक्षा संस्कार संस्कृति को... हम उनसे प्राप्त किये
न्याय वाणिज्य आयुर्वेद व... गणित संगीत प्राप्त हुए

सर्वज्ञान में महाविज्ञान... आध्यात्म ज्ञान हमें मिले
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (1)
समस्त ज्ञानी महा विज्ञानी... तीर्थंकर सर्वज्ञ हुए
उनसे प्राप्त ज्ञान गुण को... गणधर सूरी निबद्ध किये
परम्परा से प्राप्त ज्ञान को... विविध आचार्यों ने ग्रन्थित किये
स्वामी गुणधर महान् हुए... कषाय-पाहुड जिनने रचे
कर्मबन्ध के कारणभूत... कषायों का वर्णन किये
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (2)
धरसेनाचार्य से ज्ञान लेकर... आचार्य द्वय ज्ञानी हुए
भूतबली पुष्पदन्त सूरी... षट्खण्डागम वृहत रचे
कर्म सिद्धान्त जीव विज्ञान... विभिन्न द्वार से वर्णन किये
महाप्रज्ञ वीरसेन स्वामी... धवला द्वय की टीका रची
ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधा... संस्कृत प्राकृत में रचना की
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (3)
महान् हुए यतिवृषभ जी... तिलोयपण्णति रचनाकार
ब्रह्माण्ड विज्ञान वर्णन किया... अलौकिक गणित सार
विश्व इतिहास भी उसमें रचा... ब्रह्माण्डीय दृष्टिकोण से
ब्रह्माण्डे सर्वत्र जीव बताया... उनका स्वरूप वर्णन किया
कालचक्र परिवर्तन लिखा... वर्णन महाप्रलय भी किया

जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (4)

उमास्वामी हुए महाआचार्य... तत्त्वार्थ सूत्र के रचनाकार
सूत्र पद्धति वर्णन कर... संसार-मोक्ष के उपाय कहा
षट् द्रव्यों का वर्णन किया... विश्व रचना के मूल कारण
महान् सूत्र सापेक्ष कहा... यम-नियमों का वर्णन किया
सप्त तत्त्व नव-पदार्थ गूँथा... सूत्र कर्म सिद्धान्त बताया
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (5)

कुन्दकुन्द हुए आध्यात्मज्ञानी... बहु ग्रन्थों के रचनाकार
अष्ट पाहुड व समयसार... पञ्चास्तिकाय व नियमसार
अनुप्रेक्षा है द्वादशसार... प्रवचनसार ग्रन्थों का सार
नय सापेक्ष से आत्म वर्णन... सविस्तार किया वर्णन
मूलाचार है श्रमणाचार... मूलगुणों का किया विस्तार
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (6)

अनेक ग्रन्थों के रचनाकार... नेमीचन्द्र सिद्धान्त चक्री
गोम्मटसार में किया वर्णन... कर्म सिद्धान्त व जीव विज्ञान
त्रिलोकसार में लोक वर्णन... गणित ज्ञान का विश्लेषण
द्रव्य संग्रह सा महान् ग्रन्थ... जिसमें वर्णित विश्व के सूत्र
सापेक्ष शैली में सूत्र गाथा... महा सूरी की कृति महान्
जिसने रचे महान् गन्थ... (7)

वादी धुरन्धर आचार्य हुए... अकलंक समन्तभद्र भी हुए
तार्किक ग्रन्थों के रचनाकार... युक्त्यनुशासन कारिकाकार
राजवार्तिक के समीक्षाकार... नय सापेक्ष वर्णन सार
आचार्य विद्यानन्द भी हुए... श्लोक वार्तिक के रचनाकार
माणिक्यनन्दी आचार्य वर... न्याय ग्रन्थ के हैं सूत्रकार
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (8)

पूज्यपाद देवनन्दी सूरीवर... तत्त्वार्थ सूत्र के टीकाकार
इष्टोपदेश समाधितन्त्र रचा... आध्यात्मवाद का वर्णन किया
जिनसेन रविषेण सूरीवर... पुराणग्रन्थों के रचनाकार
सोमदेव आचार्य गुरुवर... चम्पूकाव्य में महाधुरन्धर
नीतिवाक्यामृत के रचनाकार... न्याय राजनीति के सूत्रकार
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (9)

महान् आचार्य देवसेन भी हुए... अनेक ग्रन्थ रचित किये
भाव संग्रह व आलाप पद्धति... चारित्रसारादि ग्रन्थ
योगीन्द्रदेव आत्मिक गुणसागर... परमात्म प्रकाश योगसार
सावयधम्म आदि रचनकार... अमृतचन्द्र भी सूरीप्रवर
कुन्दकुन्द के टीकाकार... पुरुषार्थ सिद्धि के रचनाकार
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (10)

महावीराचार्य गणित ज्ञानी... गणितसार सृजन किये

आयुर्वेद के रचनाकार... उग्रादित्य हैं सूरी प्रवर
व्याकरण व स्तुति पूजा के... अनेक आचार्य हुए लेखक
तुम भी बच्चों इन्हें भी जानो... इनके ग्रन्थों को सदा गुनो
बनोगे तुम महान् जन... 'कनकनन्दी' का आह्वान सुनो
जिसने रचे महान् ग्रन्थ... (11)
सेमारी, दि= 28/10/2011, मध्याह्न 2.51

(भारतीय पर्वों का इतिहास)
''भारतीय पर्वों के उद्देश्य-शिक्षा'' (21)

तर्ज :- (आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ...)

आओ बच्चों तुम्हें बतायें/(सुनायें), भारत के महान पर्वों को।
जिससे तुम्हें ज्ञान मिलेगा, पर्वों के महान् लक्ष्य को।।
वन्दे महोत्सवम्-वन्दे आदर्शम्

पर्वों के विभिन्न कारण होते, पद्धति व शिक्षा ग्रहण।
उसे जानकर उसे मानकर, करो है सच्चा कल्याण।
विकृत करके उठाओ न हानि, तन मन धन जन की।
सभ्यता संस्कृति सत्य तथ्य की, कभी न करो विकृति।
मूल नाश से वृद्धि न होती, वृक्ष लता और गुल्म की।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (1)

''पर्युषण'' है महान् पर्व, आत्मा के परिमार्जन का।
मार्जन करो दश धर्मों द्वारा, आत्मा के कल्मष भावों को।
व्रत उपवास ध्यान अध्ययन, पूजा-पाठ धर्म श्रवण।
उदार सहिष्णु क्षमादि द्वारा, करो है आत्म-मार्जन।
केवल दिखावा व रूढि द्वारा, न करो इसे पालन।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (2)

''दीपावली'' है प्रकाश पर्व, आत्मिक-ज्योति जलाने का।
मोह अज्ञान अन्धकार नशे, जैसे वीर गौतम का।
दीप जलाओ प्रतीक रूप में, ज्ञान-ज्योति प्रगटाने को।
निर्वाण लाडू प्रतीक मानो, पूर्णता अनन्त सुख का।
मोक्षलक्ष्मी व ज्ञान को पूजो, उसकी उपलब्धि के हेतु।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (3)

फटाके फोड़ना जूआ खेलना, फैशन व्यसन करना।
दिवालीया पना यह है पर्व और धर्म का।
रक्षा बन्धन है साधुओं की रक्षा, सेवा व्यवस्था के द्वारा।
हर जीव की रक्षा करना, यह संदेश है प्यारा।
विश्व-मैत्री व विश्व-शान्ति की, शिक्षा मिलती प्यारी।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (4)

केवल भाई-बहिनों द्वारा, मनाना केवल रूढ़ि है।
खाना-पीना मौज करना, यह भी केवल रूढ़ि है।
''स्वतन्त्रता का उत्सव'' मनाना यह राष्ट्रीय पर्व है।
जीओ और जीने दो का पवित्र कर्त्तव्य पर्व है।
स्वावलम्बन व कर्त्तव्य निष्ठा राष्ट्र विकास का पर्व है।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (5)

केवल भाषणबाजी करना, झण्डारोहण का पर्व नहीं।
पी.टी. करना, डाँस करना, रूढि पीटना पर्व नहीं।
''गणतन्त्र दिवस'' उत्सव मनाना, प्रजा ही प्रमुख राजा।
अधिकार सह कर्त्तव्य पालन, इसकी प्रमुख शिक्षा।
स्वच्छन्द बनना शोषण करना, यह तो विपरीत शिक्षा।।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (6)

ऐसा ही ''होली'', ''जन्मदिन'' मनाना, ''जन्माष्टमी'' या ''दशहरा''।
सब में हो पवित्र भाव नहीं किसी में क्षुद्र भाव।
तन मन आत्मा पावन बनाना, व्यक्ति समाज व राष्ट्र को।
किसी प्रकार भी क्षति न पहुँचे, पर्यावरण व राष्ट्र को।
इसीलिए बच्चों ''कनकनन्दी'' की यह रचना तुम्हारे हेतु।
जिससे... वन्दे महोत्सवम् (7)

सेमारी, दि= 28/10/2011 मध्याह्न 3.22

(आध्यात्मिक व्यवस्थापन गीत)

''परिणाम से परिणाम'' (22) (भाव-गीत)

तर्ज :- (रवीन्द्र संगीत... कोथाये नर्क... बंगला...)

परिणाम से परिणाम मिलता... परिणाम निर्माणकर्त्ता
परिणाम से है संसार भ्रमण... परिणाम निर्वाणकर्त्ता... (स्थायी)...

परिणाम है प्रमुख हेतु... परिणाम के लिए
द्रव्य क्षेत्र काल व साधन... गौण रूप को लिए... (1)
परिणाम से परिणमन होता... होता है ऋण व धन
ऋण से हानि-परिणाम होता... धन से विकास पुनः ... (2)
अनुकूल गति लक्ष्य दिलाए... विपरीत से है दूर
यथा मति तथा गति मिले है... दृष्टि है सृष्टि आधार... (3)
अन्धकार से तम न मिटे... प्रकाश से होता है अन्त
कुपरिणाम से सुफल न मिले... यह है सत्य सिद्धान्त... (4)
बीज के समान परिणाम होता... द्रव्यादि है जल सम
बीजानुसार ही वृक्ष तो बनता... तथाहि जानो परिणाम... (5)
अच्छे परिणाम करो हे! मनुआ... चाहो यदि है सुफल
आम के बीज से आम ही मिलेगा... यथा बीज तथा फल... (6)
परिणाम यदि अच्छा नहीं होगा... द्रव्यादि न दे सुफल

बीज के बिना केवल जल से... न होते वृक्ष व फल... (7)

साधन बिना भी परिणाम होते... करो है सुपरिणाम

सुपरिणाम से सुफल मिलेंगे... कारण से परिणाम... (8)

सुपरिणाम से पुण्यास्रव होता... पाप का होता संवर/(निरोध)

आध्यात्मिक बल जागृत होने से... होता तीव्र सुविचार... (9)

इसी से आकर्षण होता (है) उत्पन्न... आकर्षित करे सुफल

यथा लौह खण्ड आकर्षित होता... चुम्बक के ध्रुव पर... (10)

राग-द्वेष मोह घृणा ईर्ष्या... चिन्ता आदि कुपरिणाम

इसी से रहित सत्य शान्तिमय... होते हैं सुपरिणाम... (11)

निगेटिव पाजिटिव थिंकिंग... मनोविज्ञान है कहता

अशुभ, संक्लेश, आर्त्त-रौद्र ध्यान... जैनधर्म इसे कहता... (12)

धर्म व विज्ञान ग्रन्थों में पढ़ा... अनुभव में जो पाया

स्व-पर-विश्व कल्याण (के) हेतु... 'कनक' द्वारा गूँथा गया... (13)

सेमारी, दि= 31/10/2011, रात्रि 12.22

(31 अक्टूबर 2011 को विश्व जनसंख्या 7 अरब होने की सम्भावना पर कविता)

"जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ एवं समाधान" (23)

राग :- (छोटी छोटी गैया...)

जनसंख्या वृद्धि से संत्रस्त (आज) धरती

विविध समस्या से घिरी है धरती

समय रहते इसका समाधान है करो

नहीं तो अनर्थ होता अति ही घोर... (स्थायी)...

अब्रह्मचर्य से हुई सात अरब

समाधान हेतु ब्रह्म पालो मानव

अणुव्रत महाव्रत है ब्रह्मचर्य

पालन से फल मिले महा आश्चर्य... (1)

तन मन आत्मा का होता विकास

परिवार से विश्व तक होता विकास

आध्यात्म पुरुषों द्वारा शोधित सूत्र

प्राचीन काल से प्रमाणित हैं सूत्र... (2)

अब्रह्म से हुई जनसंख्या की वृद्धि

प्रकृति शोषण पर्यावरण/(परिवेश) अशुद्धि
खाद्य-अभाव, आवास की होती समस्या
सामाजिक सौहार्द की होती समस्या... (3)
अठारह सौ वर्षों में (हुई) एक अरब संख्या
सवासौ वर्षों में दो अरब संख्या
तैतीस वर्षों में तीन अरब संख्या
चौदह वर्षों में चार अरब संख्या... (4)
तेरह वर्षों में पाँच अरब संख्या
बारह वर्षों में छह अरब संख्या
तेरह वर्षों में सात अरब संख्या
पन्द्रह वर्षों में होगी आठ अरब संख्या... (5)
जनसंख्या वृद्धि से आवश्यकता वृद्धि
प्रकृति शोषण की होती है वृद्धि
जिससे जंगल की कटाई हुई
कृषि भूमि की कमी भी हूई... (6)
यातायात साधन आवास (हेतु) कारण
समस्या वृद्धि में बना अन्य कारण
सम आबंटन संसाधन का नहीं भी होना
समस्या वृद्धि में मुख्य कारण बना... (7)

समाधान हेतु ब्रह्म पालन करो
अपरिग्रह व्रत भी धारण करो
सामाजिक न्याय व दान भी करो
अहिंसा परोपकार हृदये धरो... (8)
कृत्रिम उपायों से समाधान भी नहीं
प्रकृति व संस्कृति का जोड़ भी सही
जब तक मानव आध्यात्मिक नहीं बनेगा
'कनक' मत में समाधान नहीं होगा... (9)

सेमारी, दि= 31/10/2011, मध्याह्न 3.19

"अच्छी कथा स्वीकारो-ओछी कथा नहीं!"(24)

राग :- (छोटी छोटी गैया...)

मानव भाई रे मानव भाई... अच्छी कथा मने रखो हे! तू ही।
अच्छी कथा सुनो बोल है तू ही... जिससे बनेगा महान् तू ही।। (स्थायी)...
ओछी कथा से दूर ही रहो... सुनो न बोलो मने न धरो।
बिना कारण तुच्छ न बनो... बातों बातों में दुःखी न बनो।।
निन्दा चुगली असत्य भाषा... कलहकारी कटु जो भाषा।
कूट कपट ईर्ष्या की भाषा... सर्वथा त्यागो सन्देह भाषा।।

समय शक्ति बुद्धि विनाश... कलह विद्वेष होता विशेष।
पाप बन्ध भी निश्चय होता... तुच्छतापन प्रगट होता।।
हित मित प्रिय वचन बोलो... सत्य भी बोल अति न बोलो।
कपटपूर्ण प्रिय न बोलो... विष मिश्रित मीठा न बोलो।।
सत्य सहित हित ही बोलो... हित रहित सत्य न बोलो।
धीवर को मत्स्य-स्थान न बोलो... अन्धे को अन्धा मत बोलो।।
सत्य को सुनो हित को सुनो... आत्म-परमात्मा कथा को सुनो।
स्व-पर-विश्व कल्याणी सुनो... ज्ञानामृतमय कथा को सुनो।।
कान द्वारा कुकथा विष न पीओ... मुख द्वारा कुकथा विष न घोलो।
विषपान से कर्ता की होती मृत्यु... विकथा विष से अनेक मृत्यु।।
पुनः पल्लवित होता है वृक्ष... अस्त्र से घात होने के बाद।
कुकथा अस्त्र से घात जो दिल... पल्लवित न होता सुदीर्घकाल।।
कोमल जीभ से कोमल बोलो... सब के भाव में शीतल घोलो।
'कनकनन्दी' के आह्वान सुनो... अमृत बोलो अमृत सुनो।।

सेमारी, दि= 1/11/2011, मध्याह्न 3.30

(23 सितम्बर, विश्व हृदय दिवस के अवसर पर)

"मानव चाहो यदि सदा सुखी रहना"

(स्वस्थ्य रहने के नियम) (25)

रागः- (1. बच्चों तुम निर्माता हो... 2. परदेसियों से न अखियाँ मिलाना... 3. जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा...)

दिल/(हृदय) दिमाग/(बुद्धि) देह/(शरीर) को सदा स्वस्थ्य रखना
मानव चाहो यदि, सदा सुखी रहना... (स्थायी)...
इसके लिए करो... सदा ही प्रयत्न
पथ्य हो आहार... विहार चिन्तन
शरीरश्रम व सुध्यान प्राणायाम... मानव... (1)
व्यायाम योगासन... पैदल विहार/(भ्रमण)
सात्विक आहार... दुग्ध फलाहार
हरी सब्जी भी खाओ... ताजा व हितकर... मानव... (2)
प्रदूषणों से रहित... स्थान हो तेरा सदा
आहार विहार... शयन ध्यान तथा
व्यायाम प्राणायाम... स्वाध्याय श्रम तथा... मानव...(3)
सादा हो जीवन... प्रकृति अनुसार
फैशन-व्यसनों से... रहो सदा दूर

क्रोध मान माया लोभ... मोह करो दूर... मानव... (4)
दिमाग रहे शान्त... तनाव विवर्जित
जिससे रहेगा... दिल/(हृदय) तन्दुरूस्त
जिससे रहोगे तुम भी... स्वस्थ्य मस्त... मानव... (5)
हरति ददाति जो... रक्त को यमयति
हृदय तेरा रहेगा... सदा/(सदैव) स्फूर्ति/(चुस्ति)
जीवन में रहेगी... तेरी सदा मस्ती... मानव... (6)
प्रतीक हृदय तुम्हारा... दयार्द का
करुणा प्रेम वात्सल्य... कोमल का
परोपकार सेवा व... दानादि का... मानव... (7)
इनके/(इसके) बिना तेरा... हृदय जड़ाकार
शक्ति स्फूर्ति बिना... मांस कलेवर
जिससे होता है... हृदय विकार... मानव... (8)
'कनकनन्दी' कहे/(अतएव मानव) बनो... तुम सदाचारी
शरीर श्रम युक्त... दयालु शाकाहारी
करो हे! पुरुषार्थ... सर्व दुःखहारी/(सर्व सुखकारी)... मानव...
सेमारी, दि=26/9/2011, मध्याह्न 2.59

"पापी से भी मैं लेता हूँ शिक्षा" (26)

रागः- (छोटी छोटी गैया...)

पापी से भी मुझे मिले अनेक शिक्षा... पाप न करने की विविध शिक्षा
पाप से सदा सर्वदा पतन होता... इसी से मेरी रक्षा, पाप से होता... (टेक)...

धर्मी से अनुकूल शिक्षा मिलती... पापी से प्रतिकूल शिक्षा मिलती
अस्ति-नास्ति युक्तशिक्षा पूर्णता लाती... दोनों किनारों से युक्त नदी बनती...(1)

ठोकर से शिक्षा लेता मूढ़ कुजन... अन्य की कमी से शिक्षा ले गुणी सज्जन
जलकर बचना नहीं सुज्ञान... बिना जले बचना सही सुज्ञान... (2)

नीलांजना-मृत्यु से ऋषभ हुए वैरागी... हाथी की दशा से पद्मप्रभु वैरागी
पशु हत्या से हुए नेमीनाथ वैराग्य... चार दृश्यों से बुद्ध को हुआ वैराग्य...(3)

तथाहि मुझे पापी से मिले सुज्ञान... पाप न करने का नास्तिपरक ज्ञान
अतएव पापी भी मेरा ज्ञान प्रदाता... पाप से बचने का अनुभव तरीका...(4)

यथा मद्यपायी से मिलता मुझे ज्ञान... मद्य से न नष्ट करो तन मन व धन
फैशनी से मुझे मिलता ज्ञान... व्यर्थ न गँवाओं समय व धन... (5)

बातूनी से भी मूझे मिलता ज्ञान... व्यर्थ न गँवाओं समय व मान
क्रोधी मानी भी मेरा बढाये ज्ञान... व्यर्थ से न जलाओ तन व मन...(6)

प्रसिद्धि इच्छुक से शिक्षा मिलती मुझे... प्रसिद्धि हेतु न गमाँऊ आत्मिकशान्ति
ज्ञान धन समय को नहीं गमाना... अहंकार को मुझे नहीं बढ़ाना... (7)

ऐसा ही समस्त पापी फैशनी व्यसनी से... खोटा भाव छोटा काम करने वालों से
कमी व तृटियों से युक्त वालों से... विभिन्न शिक्षा को पाऊँ उनसे...(8)

इसलिए उनसे न करता घृणा... समता भाव से शिक्षा लेता हूँ घणा
मधुप सम 'कनकनन्दी' है सदा... मधु सम गुणग्रहण में होता है मुदा...(9)

सेमारी, दि= 29/10/2011, रात्रि 12.38

"आत्मिक दृष्टि से रहित सर्व जीव निम्न श्रेणीय जीव हैं।" (27)

(भौतिक दृष्टि से पशु-पक्षी मनुष्य आदि सब समान)

तर्ज :- (छोटी छोटी गैया...)

आत्मिक-दृष्टि बिन जो जीव होते,
निम्न-श्रेणीय जीव वे सब होते।
उन्हें मिथ्यात्वी, वीर कहते,
नर सुर पशु आदि कोई भी होते।। (टेक)
आत्मिक-दृष्टि युत तब होता है जीव,

जब जानता है मैं अमूर्त जीव।
शरीर मन व इन्द्रियों से परे,
"सच्चिदानन्द मय" भौतिक परे।। (1)
"सत्यं शिव सुन्दर" मेरा स्वरूप,
राग द्वेष से उपरत रूप।
जन्म मरण व रोग विभाव,
कर्म संयोग से विकृत भाव।। (2)
धन जनमान रूप रंगादि,
सत्ता-सम्पत्ति प्रसिद्धि आदि।
शत्रु-मित्र व कुटुम्ब आदि,
कर्म बंध के आधि व व्याधि।। (3)
आकाश सम मैं अनन्त अमूर्त,
बादल सम मेरा देहादि रूप।
अभ्र नाश से न आकाश नाश,
देहादि नाश से न मेरा नाश।। (4)
देह में जन्मे यथा विविध रोग,
तथाहि रागादि आत्मिक रोग।
रोग नाश से होवे शरीर स्वस्थ्य,

रागादि नाश से आत्मिक स्वास्थ्य।। (5).
ऐसी दृष्टि युक्त जो जीव होता,
वह आत्मिक-दृष्टि सम्पन्न होता।
यहाँ से आत्मिक विकास होता,
अन्त में परम-आत्मा बनता।। (6)
इससे भिन्न जीव जो कोई होता,
पशु, नर, नारकी, देव भी होता।
साक्षरी या निरक्षरी जो कोई होता,
वह निम्नस्तरीय जीव ही होता।। (7)
जड़ शरीर से भले हो विभिन्न रूप,
आत्मिक-दृष्टि से निम्न स्वरूप।
परमज्ञान यह वीर ने दिया,
अनन्तज्ञान से यह सब पाया।। (8)
अल्पज्ञ न जाने यह सब ज्ञान,
श्रद्धा अनुभव से होता है ज्ञान।
'कनकनन्दी' उसे श्रद्धान करे,
उसी के निमित्त प्रयत्न करे।। (9)
सेमारी दि= 30/10/2011, मध्याह्न 3.08

"आत्म धर्म मेरा" (28)

राग :- (1. चार दिनों का जीना रे बन्दे... 2. जीते लकड़ी...)

परम पवित्र आत्म धर्म मेरा,
मोह राग-द्वेष परे है
द्रव्य भाव नो कर्म रहित,
ज्ञान दर्श सुख वीर्य है... स्थायी...
सत्य शिव सुन्दर स्वरूप,
गति-आगति से परे है
जन्म जरा मृत्यु रहित अवस्था,
सच्चिदानन्द अविकारी है... द्रव्य भाव... (1)
तन मन अक्ष से परे अमूर्तिक,
अनन्त गुण गण धारी है
अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व युत,
अगुरुलघु सूक्ष्म धारी है... द्रव्य भाव... (2)
जाति गति व लिंग रहित,
मार्गणा गुणस्थान परे है
शत्रु मित्र व अपना पराया,
समस्त विकल्पों से परे है... द्रव्य भाव... (3)
नाम रूप गन्ध स्पर्श रहित,

ऊँच नीच भेद परे है
'कनकनन्दी' भी नहीं मम रूप,
समस्त विभावों से परे है... द्रव्य भाव... (4)

सेमारी, दि= 1/11/2011, रात्रि 10.17

"हे बच्चों! आदर्श जीवनचर्या से बनो महान्" (29)

राग :- (दुनियाँ में रहना है तो...)

खेल खेलो बच्चों खेल खेलो... शिक्षा के साथ खेल खेलो
पैदल चलो व श्रम करो... सात्विक भोजन किया करो... (स्थायी)...

लौकिक पढ़ो व धार्मिक पढ़ो... हर ज्ञान का उपयोग करो
सत्यग्राही नम्र उदार बनो... गुणग्राही बनकर महान् बनो... (1)

योग व प्राणायाम करो... जीवों के प्रति दया करो
झूठ कभी न कहा करो... चोरी कभी न किया करो... (2)

गाली-अपशब्द मत बोलो... अश्लील काम न किया करो
साफ-सफाई रखा करो... पर्यावरण की रक्षा करो... (3)

शीघ्र सो व शीघ्र जागो... फैशनों के पीछे मत भागो
व्यसन सेवन नहीं करो... सादा जीवन जिया करो... (4)

तन मन धन का उपयोग करो... समय शक्ति विनियोग करो

सदुपयोग से होता विकास... दुरुपयोग से होता विनाश... (5)

इसी से बनोगे तुम महान्... स्वस्थ्य सबल ज्ञानी प्रधान
जीवन आदर्श सुखी बनेगा... आदर सत्कार प्रेम मिलेगा... (6)

इसके बिना न स्वस्थ्य रहोगे... ज्ञानी गुणी न श्रेष्ठ बनोगे
जीवन ही रसशून्य बनेगा... सुख शान्ति बिना तुम जियोगे...(7)

खेल से तुम स्वस्थ्य बनोगे... प्रेम संगठन तुम सीखोगे
प्राणवायु तुम्हें खूब मिलेगी... बुद्धि तुम्हारी विकास होगी... (8)

भ्रमण योगासन आदि से... ऐसा ही लाभ होगा सभी से
केवल रटन्त शिक्षा, धन से... सुखी न बनोगे जानो मन से... (9)

आदर्श जीवनचर्या के लिए... आदर्श दैनिकचर्या बनाओ
जिससे बनोगे महान तुम... 'कनकनन्दी' का आह्वान सुन... (10)

सेमारी, 2/11/2011, रात्रि 3.57

"आध्यात्मिकता से तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य" (30)

(आध्यात्मिकता से शारीरिक-मानसिक-आध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ)

राग :- (1. यमुना किनारे... 2. गहरी गहरी नदिया...)

आध्यात्मिकता को न मानो छोटा सा काम,
आध्यात्मिकता को न मानो खोटा सा काम
इसी से लाभ होते हैं बहुविध,
तन-मन आत्मा भी होते शुद्ध
कर्म के आस्रव-बन्ध नहीं होते,
आत्मिक गुण भी पुष्ट होते... (स्थायी/टेक)...

आध्यात्मिक नहीं है क्रिया-काण्ड, आध्यात्मिक नहीं है ढोंग-पाखण्ड
आध्यात्मिक होती है आत्मा की शुद्धि, आध्यात्मिक होती है भाव विशुद्धि
क्रोध मान माया लोभ मोह काम भाव, संक्लेश निन्दादि त्याग आत्मभाव...(1)...

इसी से तनाव आदि नहीं होते, विविध पाप कर्म भी नहीं बन्धते
विषाक्त स्राव ग्रन्थियों से नहीं झरता, शरीर में टॉक्सिन नहीं बनता
जिससे तन मन आत्मा स्वस्थ्य रहते, जीवन में सुख के फूल खिलते...(2)...

विज्ञान शोध से अभी ज्ञात भी हुआ, आध्यात्मिकता से विविध लाभ ही पाया
शारीरिक लाभ व मानसिक सन्तुष्टि, आध्यात्मिकता से है मिलती अति
नकारात्मक भाव का होता विनाश, क्रोनिक रोगों का होता है नाश...(3)...

कैंसर ब्रेन इन्ज्युरी अथवा स्ट्रोक, स्पाइनल कार्ड इंज्युरी हृदय स्ट्रोक
अनिद्रा चिन्ता व उदास भाव, नहीं होते हैं छोटे खोटे विभाव

शिर व शरीर में भी दर्द न होता, तन मन में हल्कापन भी होता... (4)...
सुख-शान्ति का विस्तार भी होता, स्वच्छ शक्तिशाली ओरा बनता
रोग प्रतिरोधक बल भी बढ़ता, वातावरण पावनमय बनता
कलह-झगड़ा, भेद-भाव न होता, वात्सल्य संगठन सहयोग बढ़ता... (5)...

इसी से प्रतिरक्षा का तन्त्र होता सक्षम, जिससे स्वास्थ्य को मिले अधिक दम
तनाव जनक हार्मोन होता है कम, शीघ्र मृत्यु की सम्भावना होती है कम
विज्ञान का नया शोध यह बताता, भारतीय मत को ही पुष्ट करता... (6)...

आध्यात्मिकता में गर्भित आत्मविश्वास, आत्मविज्ञान तथा आत्मसाहस
आत्मानुभव सह सदाचरण, पवित्र समता भाव आत्म रमण
शान्ति समता व पवित्र भाव, क्षमा सरल-सहजता आत्मिक भाव... (7)...

इसलिए मनुआ आध्यात्मिक बनो, कट्टर संकीर्ण धर्मी न बनो
कट्टरता आदि से यह लाभ न होते, इन लाभों से विपरीत ही होते
शुद्ध जल से यथा प्यास बुझती, अशुद्ध जल से रोग मृत्यु भी होती...(8)...

धर्म ज्ञान विज्ञान में जो मैं पढ़ा है, अनुभव द्वारा जो भी पाया है
विश्व हित हेतु यह रचना हुई, आध्यात्मिकता मुझे सदा ही भायी
'कनकनन्दी' इसकी साधना करे, वैश्विक कल्याण की भावना धरे...(9)...

सेमारी, दि= 4/11/2011, प्रातः 6.03

"कहाँ है आना-जाना-ठिकाना?" (31)

राग :- (उडिया-बंगला...) (-आचार्य कनकनन्दी)

कहाँ से आया कहाँ है जाना... कहाँ है तेरा निज ठिकाना

नीचे से आया ऊर्ध्व में जाना... स्वयं में तेरा निज ठिकाना...(स्थायी/टेक...)

निगोद तेरा अनादि वास... कर्म ने तुझे किया है दास

पुरुषार्थ से मिले स्व-निवास... जिसे कहते हैं मोक्ष निवास... (1)

कर्मों को तुमने स्वागत किया... कर्मों ने तुम को बन्धन किया

कर्म को तुम ही करो विनाश... जिससे मिलेगा आत्म-विकास...(2)

राग-द्वेष से कर्म को बान्धा... वीतराग से बनो निर्बन्धा

साम्यभाव से विरागी बनो... इसी से तुम शुद्धात्मा बनो... (3)

इसी दशा में अनन्त ज्ञान... अनन्त सुख वीर्य दर्शन

आव्याबाधत्व सूक्ष्मत्व गुण... अगुरूलघुत्व अनन्त गुण... (4)

क्षमा मार्दव शौच सत्यमय... सरल-सहज तपत्यागमय

आकिञ्चन्य व ब्रह्मचर्यमय... साम्यभाव है वीतरागमय... (5)

रत्नत्रयमय मोक्षमार्ग यह... शुद्धात्मा होने का उपाय भी यह

यह ही परम विकासोपाय... अन्य सब तो विनाशोपाय... (6)

सत्ता-सम्पत्ति पढ़ाई प्रसिद्धि... बन्ध के उपाय न मिले है सिद्धि

इसी से भिन्न है मोक्षोपाय... 'कनकनन्दी' तो उसी में तन्मय...(7)

सेमारी, दि= 5/11/2011, रात्रि 2.46

"मेरे संस्मरण में आचार्य श्री भरतसागर जी गुरुदेव"

-आचार्य कनकनन्दी

आज दि= 2/11/2011 को मध्याह्न के सामायिक के पूर्व मेरे पास कमलकुमार बाकलीवाल का पत्र आया। पत्र था "ज्ञान दिवाकर" स्मृति-ग्रन्थ सम्बन्धी, जिसमें आचार्य श्री भरतसागर जी गुरुदेव के संस्मरण आदि लिखकर भेजने के लिए अनुरोध किया गया। पत्र पढ़ते ही आचार्य श्री भरतसागर जी गुरुदेव सम्बन्धी मेरी दीर्घ स्मृति (1975 से 2005 तक) जागृत हो गई, जिससे प्रेरित, प्रोत्साहित एवं भक्ति से ओत प्रोत होकर सामायिक के बाद अन्यान्य ग्रन्थ, कविता आदि लेखन कार्य को छोड़कर 2.02 बजे इसे लिखना प्रारम्भ कर दिया। क्योंकि मैं (आचार्य कनकनन्दी) केवल वात्सल्य रत्नाकर श्री विमलसागर जी गुरुदेव तथा आचार्य भरतसागरजी के पास मध्य-मध्य में 6-7 वर्ष ही केवल नहीं रहा तथा 2-3 चातुर्मास एक साथ (आचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव ससंघ) हुआ अपितु दोनों गुरुवर मेरे प्रथम पथ प्रदर्शक एवं शिक्षा गुरु भी रहे हैं। दोनों

से मुझे बहुत वात्सल्य, तत्त्वचर्चा, शंका समाधान भी मिला। दोनों की प्रेरणा से मैंने (1) विश्व विज्ञान रहस्य (2) जिनार्चना I, II, (3) निमित्त-उपादान मीमांसा (4) पुण्य पाप मीमांसा (5) भाग्य एवं पुरुषार्थ (6) अनेकान्त सिद्धान्त आदि ग्रन्थों का लेखन-सम्पादन किया। 1989-90 में हमारा संघ (आ. कुन्थुसागर जी प्रायः 35 साधु-साध्वी)आरा विहार में चातुर्मास करके आचार्य श्री विमलसागरजी ससंघ (प्रायः 21 साधु-साध्वी) दर्शन के लिए पहुँचा। वहाँ प्रायः 1 1/2-2 महीना एक साथ वात्सल्यमय वातावरण में रहे। आचार्य श्री विमलसागरजी गुरुदेव एवं आचार्य श्री भरतसागरजी गुरुदेव के आदेश निर्देश एवं मेरे गुरुदेव की अनुमति से मैं दोनों संघ को प्रातः समयसार एवं मध्याह्न में वृहत् द्रव्य-संग्रह का स्वाध्याय कराया। दोनों संघ के साथ-साथ और भी कुछ साधु, आचार्य श्री विद्यासागरजी गुरुदेव एवं आचार्य श्री सन्मतिसागरजी गुरुदेव ज्ञानानन्द की अनेक ब्रह्मचारणियाँ और श्रावक-श्राविकाएँ स्वाध्याय से लाभान्वित हुए। उस अवधि में "वात्सल्य रत्नाकर" ग्रन्थ का भी सम्पादन कार्य चलता रहा।

1981 के महामस्तकाभिषेक (श्रवणबेलगोला) के लिए

हमारा दोनों संघ एक साथ महाराष्ट्र से विहार करता हुआ पहुँचा। वहाँ प्रायः 4-5 आचार्य संघ सहित प्रायः 200 साधु-साध्वी एक साथ रहे। आचार्य विद्यानन्दजी के निवास पर समयसार, न्यायदीपिका, वृहत् द्रव्य संग्रह आदि का स्वाध्याय चलता रहा जहाँ पर मैंने अनेक स्व-प्रश्न पूछे जिसमें आचार्य भरतसागरजी गुरुदेव की भी प्रेरणा रही। अभिषेक, प्रवचन, तत्त्वचर्चा आदि से ज्ञानानन्द प्राप्त हुआ। वहाँ पर ही अनेक आचार्य (4-5), उपाध्याय (2-3), साधु-साध्वी (शताधिक), अनेक भट्टारक, पण्डित,भक्त। के मध्य में एवं आचार्य श्री विमलसागरजी, आचार्य श्री विद्यानन्द जी, आचार्य श्री भरतसागरजी आदि के मार्गदर्शन, प्रोत्साहन से मेरी मुनि दीक्षा हुई।

पुनः दोनों संघ श्री क्षेत्र धर्मस्थल में बाहुबली प्रतिष्ठा (संभवतः 1983) के महोत्सव में भाग लिये। हमारा दोनों संघ एक साथ सम्मेद शिखरजी 2-3 बार, श्रवणबेलगोला में 1 बार दीर्घकाल तक वात्सल्यमय वातावरण में ध्यान, अध्ययन, तत्त्वचर्चा, आहारचर्या, सेवा-वैयावृत्ति आदि करता हुआ रहा। मैं प्रायः रोज आचार्य आदि की सेवा करता रहा। मेरे अस्वस्थ होने

पर हमारे संघ के साधु-साध्वी के साथ-साथ आचार्य विद्यानन्द जी आदि ने भी वैयावृत्ति की जिसे मैंने मेरे साहित्य में भी प्रकाशित किया है।

जब आचार्य भरतसागरजी का स्वास्थ्य खराब हुआ तब मैं मेवाड़-बागड़ के लोग, लोहारिया के लोगों को पत्र सहित आ. भरतसागरजी के पास भेजा उन्हें मेवाड़-बागड़ लाने के लिए। आचार्य श्री के लोहारिया चातुर्मास के बाद हमारे दोनों संघ का वात्सल्य मिलन नरवाली में (2004) हुआ।

2006 को आचार्यश्री का चातुर्मास अणिन्दा में एवं हमारा सागवाड़ा में था। इस चातुर्मास के अन्त में आचार्यश्री की समाधि हुई। समाधि के समय मैं पास नहीं था अतः इस सम्बन्धी वर्णन मैंने जो शिखरचन्द पाहाडिया के लेख में पढा एवं जिसका प्रकाशन मैंने मेरी ''वर्तमान की आवश्यकता धार्मिक उदारता न कि कट्टरता'' कृति में किया है उसका कुछ अंश निम्न में प्रस्तुत है-

परम पूज्य आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज की तीन दिन के पूर्वाभास में ''सचेतन अवस्था'' में अद्भुत समाधि।

संघपति- शिखरचन्द पहाड़िया, मुम्बई

(लेखक प्रसिद्ध उद्योगपति, गुरुभक्त, सरलस्वभावी, दानवीर, सेवाभावी हैं और प.पू.आ.विमलसागरजी से लेकर आ. भरतसागरजी की संघ सेवा, व्यवस्था में संलग्न हैं।)

प.पू. वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के प्रथम पट्टाचार्य, ज्ञान दिवाकर, उपसर्ग विजयी, परीषहों के असीम विजेता आचार्यश्री भरतसागरजी महाराज घोरोपसर्गों के बीज भी अपूर्व शान्तिपूर्वक समाधि-मरण को प्राप्त हो गये। तीन दिन पूर्व ही आचार्यश्री भरतसागरजी महाराज को पूर्वाभास हो गया था। उन्होंने अपनी निन्दा गर्हा करते हुए सर्व संघ को आगम अनुसार चर्या करने का आदेश दिया। दीपावली के पर्व के प्रथम दिवस 'धन-तेरस' के दिन आचार्यश्री ने सर्व संघ को आदेश दे दिया कि- ''मैं अपनी साधना में लीन रहूँगा, आज से कोई भी मुनि-आर्यिका, श्रावक-श्राविका मेरे चरणों को नहीं छुये, सब अपने व्रतों को निर्दोष पालें। मध्याह्न की सामायिक सर्व संघ एक साथ हमारे पास 11.30 बजे से प्रारम्भ करें।''

चतुर्दशी के दिन तत्त्वानुशासन ग्रन्थ का स्वाध्याय कराते हुए आचार्य ने कहा- 'अभिजित नक्षत्र' में होने वाली समाधि बहुत अच्छी व श्रेष्ठ होती है। आचार्य श्री गुरुदेव धर्मसागरजी, विमलसागरजी इस नक्षत्र में सामायिक प्रारम्भ किया करते थे। पाक्षिक प्रतिक्रमण मध्याह्न 1.00 बजे से 4.00 बजे

तक चला। प्रायश्चित विधि पूर्ण हुई। आचार्यश्री मौन धारण कर मात्र ध्यान में ही लीन रहे।

आचार्यश्री ने प्रातः 6.00 बजे से पार्श्वनाथ भगवान् के मन्दिर में पंचामृत अभिषेक देखे व निर्वाण लाडू की अनुमोदना की। प्रातः 8.30 बजे मन्दिर से बाहर आकर आचार्य श्री वहीं ध्यान करने बैठ गये। 10.00 बजे आहार की चर्या करके आये, अस्वस्थता के कारण प्रतिदिन आहार के बाद अल्पनिद्रा लेते थे, वह आज नहीं ली। आहार से आकर कक्ष के बाहर छोटे से पाटे पर बैठ गये। सबने कहा- आचार्य श्री थोड़ा आराम कर लीजिये। आचार्यश्री ने कहा- "अब आराम का समय नहीं रहा है, बस पुनः ध्यान में लीन हो गये।" ठीक समय 11:15 पर सर्व साधुसंघ आचार्यश्री के चरणों में विमल भक्ति लेकर प्रत्याख्यान विधि व सामायिक की तैयारी के लिए आ पहुँचे। प्रत्याख्यान विधि, सिद्ध भक्ति, योगी भक्ति, ईर्यापथ भक्ति हुई। आचार्यश्री भक्ति का क्रम आया तो आचार्यश्री ने कहा- आचार्य भक्ति नहीं होगी। सबने प्रार्थना की गुरुदेव आचार्य भक्ति करने दीजिये, तब आचार्यश्री ने कहा- 11:30/11:35 हो चुके हैं, मेरे पास समय नहीं है क्या-क्या करूँ। सभी एक साथ प्रत्याख्यान कर लीजिये, सभी ने एक साथ प्रत्याख्यान किया।

आचार्य ने कहा- बस सामायिक प्रारम्भ कीजिये। आचार्यश्री ने

कायोत्सर्ग प्रारम्भ किया और अपनी गर्दन टेक दी, स्वर्गवासी हो गये। उस समय अभिजित नक्षत्र था। चारों ओर हाहाकार मच गया, सन्नाटा छा गया, इशारे में ही अपनी समाधि का निर्यापक बनकर, अनन्त में लीन हो गया- एक सन्त। संघ ही नहीं, भव्यात्मा श्रावकगण अपने आपको अनाथ अनुभव कर बहती अविरल अश्रुधारा को थाम नहीं पाये। जिसके कानों ने इन शब्दों को सुना- वे सब स्तब्ध रह गये। जैन जगत् का एक सूर्य अस्त हो गया। इस युग के सन्त की स्मृति युगों-युगों तक भव्यात्माओं को अपनी सहनशीलता, दृढ़ता, विनयशीलता, गुरु भक्ति से प्रेरित करती रहेगी। एक चिराग बुझ गया अनन्त में लगभग 40 हजार भव्यात्माओं ने श्रीफल भेंट कर अपनी श्रद्धांजली दी। सभी के नेत्र अविरल अश्रुपूरित थे।

ऐसे स्व. आचार्यश्री भरतसागरजी गुरुदेव संस्मरण लिखने के लिए मेरे भाव, हाथ के साथ-साथ पेन भी सक्रिय हो उठे। इस संस्मरण लिखते लिखते मेरे भाव पूर्व पुण्यमय, वात्सल्यपूर्ण, ज्ञानानन्ददायी स्मृति से आल्हादित/प्रमुदित/उत्साहित हो रहा है। इसके कारण और भी अनेकानेक पावन-स्मरण जागृत हो रहे हैं और मुझे लिखने के लिए प्रेरित कर रहे हैं परन्तु लेख के विस्तार भय से सांगोपांग वर्णन न करके संकेत परक कर रहा हूँ। यथा-आचार्यश्री भरतसागरजी गुरुदेव अत्यन्त शान्त, गम्भीर,

मौनप्रिय, मृदु, सरल-सहज, स्वाध्याय प्रेमी, स्मित हास्य वाले, तत्त्व जिज्ञासु, हित-मित-प्रिय वचन एवं प्रवचनकर्त्ता, निन्दा-चुगली-ईर्ष्या-द्वेष-दंभ-छिन्द्रान्वेषण से रहित, मनीषी, लेखक, पाठक, साधक थे। आचार्य विमलसागरजी गुरुदेव एवं आचार्य भरतसागरजी गुरुदेव मेरे प्रत्यक्ष में एवं परोक्ष में भी मुझे कलिकाल के समन्तभद्र, अकलंकदेव कहते थे। यह सब उनके एक लघु शिष्य के प्रति वात्सल्य-उत्साहवर्धन के गुण है। ऐसे स्व.गुरुवर के गुणस्मरण-लेखन से मैं स्वंयं को भाग्यशाली, पुण्यशाली मानता हूँ। ऐसे कार्य के लिए मुझे सुअवसर प्रदान करने वालों को भी सधन्यवाद आशीर्वाद है।

आचार्य श्री के पावन गुण स्मरण से मैं इन गुणों का विकास चाहता हूँ। स्व.आचार्यश्री को त्रिभक्ति सहित अन्तशः नमोऽस्तु करके स्वयं की सुसमाधि साधना की सुभावना भाता हूँ। ज्ञान दिवाकर स्मृति ग्रन्थ प्रकाशन समिति के कार्यकर्त्ताओं को भी ऐसे महान् शुभ कार्य के लिए शुभाशीर्वाद सह-

आचार्य कनकनन्दी

(स्व. आचार्य भरतसागरजी के वात्सल्यपूर्ण सहधर्मी एवं शिष्य)

सेमारी, दि= 2/11/2011, मध्याह्न 4.18

विज्ञान मेला में आचार्य कनकनन्दी ससंघ

विज्ञान मेला व मातृ सम्मेलन में बाल वैज्ञानिकों द्वारा निर्मित मॉडलों के अवलोकन, तत्सम्बन्धी प्रश्न, सुझाव एवं पुरस्कार प्रदान तथा उद्बोधन का एक दृश्य (विद्यानिकेतन सेमारी, 2011)

प्रस्तुत कृति के द्रव्यदाता

श्री मांगीलाल बन्धु लक्ष्मीलाल जी जैन (मालवी)
सपरिवार तथा मातुश्री
मु.पो. झाड़ोल (सराडा), जि. उदयपुर (राज.)